About the Book

इस किताब को अग्रवाल एग्जामकार्ट के विशेषज्ञों की टीम ने तैयार किया है। इस पुस्तक को लाने में हमारी टीम ने बहुत मेहनत की है। टीम ने पिछले वर्षों के प्रामाणिक प्रश्नपत्रों को एकत्र किया, अलग-अलग प्रश्नों को विषयवार और टॉपिकवार किया और उनके आधार पर विशेषज्ञों ने प्रश्नकोश तैयार किया, फिर प्रत्येक प्रश्न का विस्तृत हल प्रदान किया तथा उनके आधार पर थ्योरी को तैयार किया। इस पुस्तक के हल उन विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए हैं जिनके पास विशाल शिक्षण अनुभव और छात्रों के चयन का सराहनीय ट्रैक रिकॉर्ड है। यही कारण है कि प्रत्येक हल व्यापक, सटीक और समझने में आसान है। कई बार इन प्रश्नों को समान प्रारूपों में दोहराया जाता है और इसलिए इन महत्वपूर्ण प्रश्नों को हल करने से निश्चित रूप से आपको अपनी परीक्षा की तैयारी करने और अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

Other Important Books

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART PLUS

CB1792

सामान्य हिंदी अध्ययन पुस्तक

ISBN - 978-93-6054-967-1

9 789360 549671

₹ 349

सामान्य हिंदी अध्ययन पुस्तक

CB1792

AGRAWAL EXAMCART PLUS

AGRAWAL EXAMCART PLUS

भारत की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

सामान्य हिंदी

निम्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी

UPSC & State PCS | SSC GD | DSSSB | Gramin Bank Exams | All States Police & SSC Exams | CTET and State TET | KVS, NVS & EMRS Exams | School Entrance and Scholarship Exams | Olympiads

इस पुस्तक का गहन अध्ययन बनाये आपको प्रत्येक प्रश्न को हल करने में सक्षम !

मुख्य विशेषताएँ

1. **थ्योरी** — एकमात्र पुस्तक जिसमें सभी परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों का समावेश है
2. **सरलीकृत पाठ्यपुस्तक (शॉर्टकट्स के साथ!)** — हर अध्याय को सरलता से समझाने के लिए उसे बुलेट पॉइंट्स, tables एवं फ्लोचार्ट के माध्यम से समझाया गया है
3. **अभ्यास प्रश्न** — भारत की सभी महत्वपूर्ण परीक्षाओं से चयनित महत्वपूर्ण प्रश्नों को अध्यायवार दिया गया है

Code	Price	Pages	ISBN
CB1792	₹349	307	978-93-6054-967-1

विषय सूची

➔ **Important Information**	**v**
सामान्य हिंदी	**1-301**
भाग-1 : हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि	
1. हिंदी भाषा का उद्भव, विकास एवं देवनागरी लिपि	1-16
भाग-2 : व्याकरण	
2. वर्ण विचार	17-23
3. संधि एवं संधि–विच्छेद	24-31
4. उपसर्ग	32-35
5. प्रत्यय	36-41
6. समास	42-48
7. शब्द शुद्धि/वर्तनी	49-55
8. संज्ञा	56-59
9. सर्वनाम	60-63
10. विशेषण	64-68
11. क्रिया	69-72
12. अव्यय (अविकारी शब्द) क्रिया–विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, सकारात्मक–नकारात्मक एवं निपात	73-77
13. पद–परिचय	78-82
14. व्याकरणिक कोटियाँ : लिंग, वचन, परसर्ग (कारक), काल, वृत्ति एवं पक्ष	83-90
15. वाक्य रचना : अंग, रचना व अर्थ के आधार पर भेद, पदक्रम एवं पदबंध	91-98
16. वाच्य : कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य	99-102
17. विराम चिह्न	103-107
18. वाक्य शुद्धि/वाक्यगत अशुद्धियाँ	108-112
19. रिक्त स्थानों की पूर्ति	113-117
20. वाक्य क्रम–व्यवस्थापन	118-122
21. शब्द–शक्ति	123-126
22. रस	127-133
23. छंद	134-140
24. अलंकार	141-150

भाग-3 : शब्द विचार

25. शब्द रचना : (क) रूढ़, यौगिक एवं योगरूढ़ (ख) तत्सम–तद्भव (ग) देशज–विदेशज, पुनरुक्त शब्द–युग्म 151-156

26. शब्द–युग्म : श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (समान–सा उच्चारण किन्तु भिन्न अर्थ वाले शब्द) 157-161

27. अनेकार्थक शब्द 162-164

28. पर्यायवाची शब्द 165-168

29. विलोम शब्द 169-173

30. समानार्थी शब्दों का विवेक एवं सम्बन्धवाची शब्दावली 174-176

31. वाक्यांश के लिए एक शब्द 177-185

32. मुहावरे–लोकोक्तियाँ 186-192

33. मानक पारिभाषिक शब्दावली : (क) प्रशासनिक शब्दावली (ख) पदनाम सूची 193-204

34. शब्दकोश में शब्दों के क्रम का निर्धारण 205-208

भाग-4 : रचना

35. वृद्धिकरण या पल्लवन 209-213

36. संक्षेपण 214-218

37. पत्र एवं प्रारूप लेखन 219-234

38. अनुवाद : अंग्रेजी–हिंदी 235-241

भाग-5 : हिंदी साहित्य

39. हिंदी साहित्य : (क) गद्य–पद्य साहित्य का इतिहास (ख) प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ एवं विधाएँ (ग) प्रसिद्ध पंक्तियाँ एवं हिंदी में सर्वप्रथम (घ) कवि–लेखक एवं उनकी रचनाएँ (ङ) पुरस्कार एवं सम्मान 242-284

40. काव्य : (क) लक्षण, काव्य–प्रयोजन, काव्य–गुण–दोष, काव्य के अन्य विधान; (ख) अरस्तू का अनुकरण सिद्धांत एवं लोंजाइनस का उदात्त तत्व 285-293

भाग-6 : पाठ बोधन

41. (क) अपठित गद्यांश (ख) अपठित पद्यांश 294-301

IMPORTANT INFORMATION!
(कृपया इसको पढ़ना न भूलें!)

प्रश्नों के व्याख्यात्मक हल से संबंधित जानकारी !

अध्याय में जिन प्रश्नों के व्याख्यामक हल नहीं दिए गए हैं उनको पढ़ने के लिए QR Code Scan कर सकते हैं।

Scan this QR Code

Outdated पुस्तकों को खरीदने से सावधान !

कई छात्र पुस्तकों की सही जानकारी नहीं होने के कारण outdated पुस्तकों को खरीद लेते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए हमने www.examcart.in वेबसाइट शुरू की है जिसपर सिर्फ latest और updated पुस्तकें ही मिलती हैं। इसलिए किसी भी परीक्षा की पुस्तक को खरीदने से पहले उसको हमारी website पर दी गयी उस परीक्षा की पुस्तक से तुलना करें। वेबसाइट की अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं -

- वेबसाइट पर हर पुस्तक की Sample PDF दी गयी है जिसे पढ़कर आप पुस्तक को खरीदने से पहले उसकी गुणवत्ता को जानें।
- हर पुस्तक के साथ में उस परीक्षा से सम्बंधित सभी जानकारी का blog भी दिया गया है।
- Agrawal Examcart की पुस्तकों पर सभी E-commerce वेबसाइट्स की तुलना में सबसे ज़्यादा discount हमारी वेबसाइट पर मिलेगा।
- Agrawal Examcart की पुस्तकें सुनिश्चित करती हैं कि आपका Exam पहली बार में ही Crack हो जाये।
- वेबसाइट पर पुस्तकों को order एवं track करना काफी आसान है।

www.examcart.in

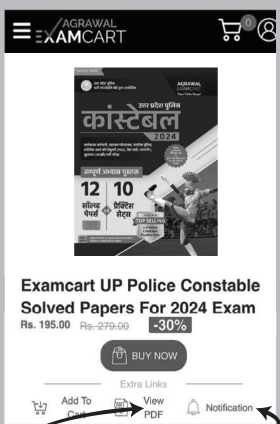

Exams की पूरी जानकारी के लिए

Sample PDF देखने के लिए

Whatsapp Helpline: आपकी हर समस्या का समाधान!

आपके पुस्तक खरीदने से लेकर परीक्षा होने तक के सफर में हम आपके सारथी होंगे। इसीलिए Agrawal Examcart Experts ने Whatsapp Helpline सर्विस शुरू की है जिसपर मैसेज करके हमारे experts आपको 24 Working Hours के अंदर जवाब देंगे। इस सर्विस में निम्न सेवाएं उपलब्ध हैं -

- **Error & Doubts:** हमारी किसी भी पुस्तक में यदि आपको कुछ गलत लगे या किसी भी प्रश्न में कोई doubt हो तो आप उसका screenshot पुस्तक के नाम एवं पेज के साथ हमें मैसेज करें।
- **Exam info:** परीक्षा से सम्बंधित किसी भी जानकारी के लिए हमें मैसेज करें।
- **Prepartion strategy:** परीक्षा को प्रथम प्रयास में पास करने की strategy को समझने के लिए हमें मैसेज करें।
- **Website order track:** हमारी वेबसाइट से अपने आर्डर की डिलीवरी की जानकारी या आपकी ज़रुरत अनुसार सबसे बेहतरीन पुस्तक की जानकारी के लिए हमें मैसेज करें।

Scan QR code to Whatsapp us

Whatsapp Helpline Number
+91 8937099777

Follow our Youtube channel **"Examcart Live"** and Instagram Page **(examcart _agp)** for exam updates and new book releases.

Scan this code to Subscribe our Youtube Channel

Scan this code to follow our Instagram page

अध्याय 1 हिंदी भाषा का उद्भव, विकास एवं देवनागरी लिपि

वैश्विक भाषा परिवार और हिंदी

- विश्व के लगभग तीन हजार भाषा समूहों को तेरह भाषाई परिवारों में वर्गीकृत किया गया है।
- जिनमें द्रविड़, चीनी, हेमेटिक, सेमेटिक, आग्नेय, यूराल (अल्टाइक), बांटू, काकेशस, सूडानी, बुशमैन, जापान–कोरियाई, अमेरिकी (रेड इंडियन), तथा भारोपीय प्रमुख रूप से शामिल हैं।
- हिंदी भारोपीय (इंडो–ग्रीक) परिवार की भाषा है।

भारोपीय भाषा

- भारोपीय परिवार की भाषाएँ प्रायः भारत एवं यूरोप तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में बोली जाने के कारण भारोपीय कहलाती हैं।
- इस भाषा परिवार के लोगों के मूल स्थान के बारे में एक निश्चित मत नहीं है, किंतु अधिकांश भाषा विद्वानों का मत है कि ब्रान्देश्ताइन ही इसका मूल स्थान है, जो यूराल पर्वत के दक्षिण-पूर्व में खिरगीज के मैदान तक विस्तारित है।
- इस परिवार की दो मुख्य शाखाएँ मानी गई हैं– सतम् तथा केंतुम। जिसमें केंतुम में तोखारियन, केल्टिक, जर्मनिक, इटैलिक, ग्रीक तथा इलीरियन शामिल हैं, जबकि सतम् में अल्बानियन, आर्मीनियन, बाल्टोस्लाविक, थेसो–फ्रीजियन तथा भारत–ईरानी शामिल हैं।
- भारत–ईरानी का एक अन्य नाम आर्यशाखा भी है। अपने मूल स्थान से भारत–ईरानी भाषा वर्ग के कुछ लोग ईरान चले गए, जबकि कुछ कश्मीर तथा आसपास बस गए, तो उनमें से कुछ भारत के मैदानी भाग में आ गए।
- इस प्रकार भारत–ईरानी भाषा की तीन शाखाएँ हुईं–(i) ईरानी (ii) द्रविड़ (iii) भारतीय आर्यभाषा।
- हिंदी भाषा के नामकरण का इतिहास 'सिन्धु' नदी से संबंधित है।
- 1500 ई.पू. के आसपास भारतीय आर्यों ने ईरानियों एवं दरद भाषाई लोगों से अलग होकर पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर सीमा से भारत में प्रवेश किया। इस प्रकार भारत में आर्यभाषा का आरम्भ 1500 ई.पू. से माना जाता है। भारतीय आर्यभाषाओं के इस 3500 वर्ष के इतिहास को तीन कालों में विभाजित किया गया है–

भारतीय आर्यभाषा का विभाजन

भारतीय आर्यभाषा को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है–

- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा – 1500 ई.पू. से 500 ई. पू. तक
- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा– 500 ई.पू. से 1000 ई. पू. तक
- आधुनिक भारतीय आर्यभाषा– 1000 ई. पू. से वर्तमान तक

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ (1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)

- भारत में आर्यशाखा के आगमन के साथ भारत के तत्कालीन मूल निवासियों के संपर्क से भारतीय आर्यभाषा ने ईरानी और द्रविड़ भाषाओं से अपना पृथक् स्वरूप विकसित किया, जिसके प्राचीनतम प्रमाण वैदिक संहिताओं में मिलते हैं, जिन्हें 1200 ई.पू. से 900 ई.पू. के बीच रचित माना जाता है तथा इसी भाषा को संस्कृत कहा गया।
- संस्कृत भाषा का प्राचीनतम रूप 'ऋग्वेद' में मिलता है।
- संस्कृत शब्द का प्रथम प्रयोग वाल्मीकि 'रामायण' में ही मिलता है। इस संस्कृत के दो रूप हैं–वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. से 800 ई.पू. तक) और लौकिक संस्कृत (800 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)।
- वैदिक संस्कृत में वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक तथा प्राचीन उपनिषद् आदि रचे गए हैं। वैदिक संस्कृत के तीन रूप मिलते हैं–उत्तरी, मध्यदेशी व पूर्वी।
- लौकिक संस्कृत में उत्तरी रूप को अधिक प्रामाणिक माना गया तथा पाणिनि ने उसे अपने व्याकरण ग्रन्थ (अष्टाध्यायी) का आधार बनाया।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ (500 ई.पू. से 1000 ई. तक)

- पाणिनि ने लौकिक संस्कृत के व्याकरण की रचना कर उसके रूप को स्थिरता प्रदान की और वह संस्कृत साहित्य में लंबी अवधि तक अनुकरणीय रहा, लेकिन 500 ई.पू. के पश्चात् सामान्य जन ने अपनी भाषा का विकास कर आगे बढ़ने का प्रयास किया ।
- इसी जनभाषा के 500 ई.पू. से 1000 ई. तक के स्वरूप को मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा का काल कहा गया और इसी भाषा को प्राकृत (वह भाषा जिसका संस्कार नहीं किया जा सकता और सामान्य जन की भाषा पर बिना संस्कारित हुए अपने प्राकृत रूप में ही रही) भी कहा गया है।
- प्राकृत भाषा वैदिक या लौकिक संस्कृत से उद्भूत नहीं है। यह तो उस समय की सामान्य जन की भाषा के रूप में स्थापित हुई ।
- प्राकृत भाषा के 1500 वर्षों के काल को तीन खंडों में विभाजित किया गया है–प्रथम प्राकृत (500 ई.पू. से 1 ई. तक), द्वितीय प्राकृत (1 ई. से 500 ई. तक) और तृतीय प्राकृत (500 ई. से 1000 ई. तक)।

प्रथम प्राकृत – पालि भाषा (500 ई.पू. से 1 ई. तक)

- प्रथम प्राकृत को पालि भाषा कहा जाता है।
- इसका प्राचीनतम प्रयोग चौथी शताब्दी ई. पू. में रचित बौद्ध ग्रंथों में किया गया है।
- परिवर्ती समय के बौद्ध ग्रंथों में भी प्राकृत पालि भाषा का प्रयोग किया गया है जिनमें सिंघली अनुश्रुति दीपवंस और महावंश भी शामिल हैं।
- प्राकृत भाषा में रचित अन्य ग्रंथों में गौतम बुद्ध से संबंधित साहित्य–जातक, धम्मपद, मिलिंदपन्हो, बुद्धघोष की अट्ठकथा तथा प्रमुख हैं।
- प्राकृत भाषा के चार रूप थे–तरी, दक्षिणी, मध्यवर्ती और पूर्वी ।
- अशोक काल के शिलालेखों में भी यही भाषा अंकित है। इसे मागधी भाषा भी कहा जाता है।

द्वितीय प्राकृत– (1 ई. से 500 ई. तक)

- प्राकृत शब्द के दो आशय हैं–एक सामान्य जन द्वारा बोली जाने वाली संस्कृत से निकली हुई 300 ई.पू. से 1000 ई. तक की भाषा। जिसमें प्रथम प्राकृत के रूप को पालि तथा द्वितीय प्राकृत के रूप को प्राकृत तथा तृतीय प्राकृत के रूप को अपभ्रंश कहा गया है ।
- प्राकृत का दूसरा आशय है–द्वितीय प्राकृत (1 ई. से 500 ई. तक की भाषा) के सन्दर्भ में लिया जाता है। इस द्वितीय प्राकृत के धर्म, प्रदेश, प्रयोग, लेखन आदि के आधार पर अनेक भेद किए गए। जिनमें **शौरसेनी** (मथुरा और शूरसेन के आस-पास की), **पैशाची** (कश्मीर के आस-पास),

महाराष्ट्री (महाराष्ट्र), अर्द्धमागधी (मगध और मथुरा के मध्य), **मागधी** (मगध के आस–पास), केकय (पाकिस्तान में लहंदा का क्षेत्र), टक्क (पंजाब का क्षेत्र), खस (हिमाचल व पास का पहाड़ी क्षेत्र), **ब्राचड़** (सिंध) प्रमुख हैं।

तृतीय प्राकृत–अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई. तक)

- प्राकृत की तुलना में भी जिस भाषा का रूप बिगड़ा हुआ है या फिर जिसमें में ध्वनि एवं व्याकरण के स्तर के परिवर्तन हो गए, उसे विद्वानों ने अपभ्रंश या अवहट्ठ (अपभ्रष्ट) की संज्ञा दी है।
- यह अपभ्रंश मध्यकालीन प्राकृत और आधुनिक काल की भाषाओं के बीच की कड़ी के रूप में प्रचलित है यों तो प्राकृत भाषा सर्वस्व नामक ग्रंथ में अपभ्रंश के 27 भेद माने हैं, किंतु इनमें केकय, टक्क, ब्राचड़, शौरसेनी, महाराष्ट्री, अर्द्धमागधी और मागधी ही प्रमुख माने हैं।
- भाषाविद् डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने अवहट्ठ को अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच की कड़ी माना है, लेकिन वास्तव में अपभ्रंश शब्द से ही अवहट्ठ बना है, जो अपभ्रंश के लिए ही प्रयुक्त होता आ रहा है।
- चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने अपभ्रंश के परिनिष्ठित रूप को 'पुरानी हिंदी' की संज्ञा दी है।
- हिंदी का विकास शौरसेनी, अर्द्धमागधी और मागधी अपभ्रंशों से हुआ है।
- हिंदी 'फारसी' भाषा का शब्द है तथा यह सिंधु से संबंधित है।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ (1000 ई. से वर्तमान तक)

- अपभ्रंश से आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास लगभग 1000 ई. के आस-पास माना जाता है । इस सन्दर्भ में 1100 ई. से तो भाषा साहित्य के लिखित प्रमाण उपलब्ध हैं।
- आधुनिक आर्यभाषाओं में सिंधी भाषा सिंधु नदी के आस–पास बोली जाने के कारण सिंधी कहलाई। इसके अधिकांश बोलने वाले लोग पाकिस्तान में हैं किंतु भारत विभाजन के फलस्वरूप सिंध प्रदेश से भारत में आए भारतीयों में भी इसका प्रचलन देखा जाता है। इसकी लिपि फारसी लिपि की तरह है। सिराकी, थारली, बिचोली, लासी, लाड़ी, कच्छी इसकी बोलियाँ हैं।
- 'लहंदा' पश्चिमी पंजाब में बोली जाने के कारण लहंदा या लहंदी कहलाती है। इस भाषा का क्षेत्र भी पाकिस्तान का पश्चिमी पंजाब माना जाता है।
- भारत विभाजन के फलस्वरूप लहंदा क्षेत्र से आए भारतीय नागरिक भी इसका प्रयोग करते हैं। इसकी बोलियों में डिलाही, त्रिमाली, पोठवारी जटकी, उच्ची, हिंदी की, मुल्तानी, जांगली आदि हैं।
- 'पंजाबी'का तात्पर्य पाँच नदियों (आब) के देश की भाषा से है । यह भारत और पाकिस्तान के पंजाबी प्रदेशों में बोली जाती है। इसकी लिपि गुरुमुखी है तथा इसकी मुख्य बोलियाँ डोगरी, दोआबी, माझी, मालवई, पोवाधी, राठी आदि हैं।
- 'गुजराती' का संबंध गुजरात अर्थात् गुर्जर जाति से माना जाता है। इस भाषा की अपनी स्वतंत्र लिपि है। इसकी मुख्य बोलियाँ पट्टनी, सुरती, काठियावाड़ी, आदि हैं।
- 'मराठी', महाराष्ट्र में बोली जाती है, इसकी लिपि देवनागरी है। इसकी बोलियों में कोष्टी, माहारी नागपुरी, बरारी,कोंकणी हैं।
- गोआ प्रदेश की भाषा कोंकणी को अब स्वतंत्र भाषा का स्थान प्राप्त हो गया है। यद्यपि इसकी अपनी स्वतंत्र लिपि नहीं है।
- 'बांग्ला' भारत के पश्चिमी बंगाल तथा बांग्लादेश में बोली जाती है। इसकी अपनी स्वतंत्र लिपि है तथा इसकी बोलियों में पश्चिमी, दक्षिण–पश्चिमी, उत्तरी, राजबंगशी, पूर्वी आदि शामिल हैं।
- 'असमी' असम प्रदेश की भाषा है, इसकी अपनी स्वतंत्र लिपि है तथा इसकी मुख्य बोलियाँ विश्नुपुरिया, झरबा, मायांग हैं।
- 'उड़िया' उड़ीसा राज्य की भाषा है, इसकी व्युत्पत्ति द्रविड़ शब्द ओड्र से हुई है। इसकी भी अपनी स्वतंत्र लिपि है तथा गंजाभी, संभलपुरी, भत्री आदि इसकी प्रमुख बोलियाँ हैं।
- 'नेपाली' का मुख्य क्षेत्र तो नेपाल है, किंतु इसके बोलने वाले लोग भारत में स्थित पूर्वी बिहार,गोरखा क्षेत्र और पश्चिमी बंगाल में रहते हैं। इसकी लिपि देवनागरी है। इसकी दो बोलियाँ डोटाल और थरुहरी हैं। हिंदी के सन्दर्भ में उल्लेख निम्नवत किया जा रहा है।

आधुनिक आर्यभाषाओं के वर्गीकरण पर होर्नले, वेबर, ग्रियर्सन, सुनीति कुमार चटर्जी, धीरेंद्र वर्मा, भोलानाथ तिवारी आदि भाषाविदों ने अलग-अलग मत व्यक्त किए हैं, किंतु यहाँ केवल हिंदी के स्वरूप एवं विकास पर ही ध्यान केंद्रित करना वांछित रहेगा।

हिंदी का अर्थ एवं स्वरूप

- हिंदी का शाब्दिक अर्थ है – हिंद और हिंद शब्द बना है : संस्कृत के सिंधु से, सिंध ⟶ हिंद ⟶ हिंदू। संस्कृत का सिंधु फारसी में हिंदू हो गया है।
- सिंधु नदी से पश्चिम की दिशा के निवासियों ने सिंधु नदी के पूर्व दिशा के निवासियों को हिंदू (सिंधु ⟶ हिंदू) कहा और उनकी भाषा को हिंदी कहा।
- भारत के पश्चिम भाग विशेष रूप से जोधपुर, जैसलमेर–बाड़मेर जनपदों की बोली में तथा फारसी भाषा में शब्द के प्रारंभ में आने वाली **स** की ध्वनि **ह** में परिवर्तित हो जाती है, जैसे– **सड़क ⟶ हड़क, सीरा ⟶ हीरा।**
- प्रारंभ में हिंदू, हिंद एवं हिंदी मूलतः तो भौगोलिक संदर्भ में प्रयुक्त हुए थे लेकिन कालांतर में धर्म, संप्रदाय एवं राजनीति के संदर्भ भी उनसे जुड़ते गए। वर्तमान हिंदी शब्द का प्रयोग एक भाषा विशेष के लिए किया जाता है। वर्तमान में हिंदी के मुख्य रूप से चार मुख्य अर्थ हैं–
- **व्यापक अर्थ :** यह सबसे प्राचीन अर्थ है, जो मुसलमानों के भारत में बसने से पूर्व का है। जिसका तात्पर्य है– सिंधु नदी से पूर्व के भू-भाग (हिंदी) से संबंधित लोग, वस्तु आदि।
- **सामान्य अर्थ :** यह अर्थ 13वीं से 18वीं शताब्दी के बीच प्रचलित रहा, जिसके अनुसार मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पूर्वी पंजाब, बिहार और राजस्थान की बोलियाँ हिंदी भाषा के नाम से जानी जाती थी।
- **विशिष्ट अर्थ :** यह अर्थ भाषा, हिंदवी, हिंदुई, हिंदोस्तानी, दक्खिनी, रेख्ता, उर्दू, आदि विविध नामों के लिए उनके नए विकल्प के रूप में किया गया। 19वीं शताब्दी से यह विशेष अर्थ में चल पड़ा और आज यह अर्थ अधिक प्रचलन में है, जिसके अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, तथा उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, हिमाचल प्रदेश एवं, दिल्ली राज्यों की एवं केंद्रशासित क्षेत्र अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजभाषा है। हिंदी की अनेक बोलियों में से यह राजकाज और साहित्य, पत्रकारिता के क्षेत्र में मानक भाषा के रूप में समादृत है। यह मानक भाषा खड़ीबोली, **बाँगरू** तथा **ब्रज** के **मिश्रण** से **फारसी** की कोमल छाया में विकसित हुई एक अद्भुत भाषा है जो किसी एक स्थान की भाषा न होते हुए भी इन सब प्रदेशों की एवं इनके बाहर भी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों की भाषा है।
- **भाषावैज्ञानिक अर्थ :** हिंदी का एक भाषावैज्ञानिक अर्थ यह भी है जो हिंदी राज्यों में बोली जाने वाली 18 बोलियों के संकुल के रूप में, एक भाषा विशेष के रूप में विकसित हुआ है। जिसकी 5 उपभाषाएँ (विभाषाएँ) हैं– बिहारी, पूर्वी, पश्चिमी, राजस्थानी और पहाड़ी।

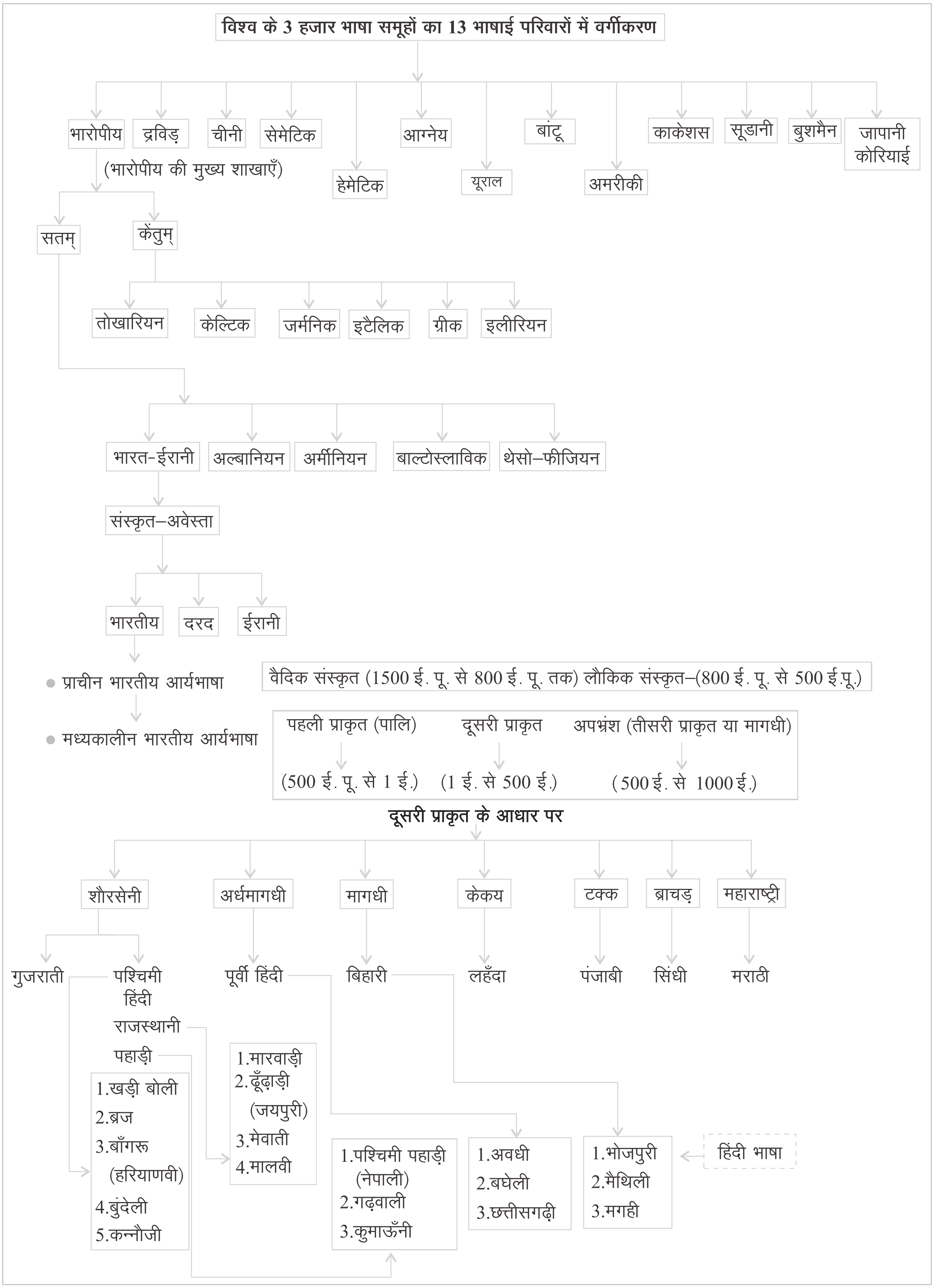
विश्व के 3 हजार भाषा समूहों का 13 भाषाई परिवारों में वर्गीकरण
भारोपीय
द्रविड़
चीनी
सेमेटिक
हेमेटिक
आग्नेय
यूराल
बांटू
अमरीकी
काकेशस
सूडानी
बुशमैन
जापानी कोरियाई
(भारोपीय की मुख्य शाखाएँ)
सतम्
केंतुम्
तोखारियन
केल्टिक
जर्मनिक
इटैलिक
ग्रीक
इलीरियन
भारत-ईरानी
अल्बानियन
अर्मीनियन
बाल्टोस्लाविक
थेसो–फीजियन
संस्कृत–अवेस्ता
भारतीय
दरद
ईरानी
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा
वैदिक संस्कृत (1500 ई. पू. से 800 ई. पू. तक) लौकिक संस्कृत–(800 ई. पू. से 500 ई.पू.)
मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा
पहली प्राकृत (पालि)
(500 ई. पू. से 1 ई.)
दूसरी प्राकृत
(1 ई. से 500 ई.)
अपभ्रंश (तीसरी प्राकृत या मागधी)
(500 ई. से 1000 ई.)
दूसरी प्राकृत के आधार पर
शौरसेनी
अर्धमागधी
मागधी
केकय
टक्क
ब्राचड़
महाराष्ट्री
गुजराती
पश्चिमी हिंदी
पूर्वी हिंदी
बिहारी
लहँदा
पंजाबी
सिंधी
मराठी
राजस्थानी
पहाड़ी
1.खड़ी बोली
2.ब्रज
3.बाँगरू (हरियाणवी)
4.बुंदेली
5.कन्नौजी
1.मारवाड़ी
2.ढूँढ़ाड़ी (जयपुरी)
3.मेवाती
4.मालवी
1.पश्चिमी पहाड़ी (नेपाली)
2.गढ़वाली
3.कुमाऊँनी
1.अवधी
2.बघेली
3.छत्तीसगढ़ी
1.भोजपुरी
2.मैथिली
3.मगही
हिंदी भाषा

हिंदी भाषा का विकास

हिंदी के विकास की पूर्व पृष्ठभूमि में यह उल्लेख किया गया है कि विश्व की भाषाओं के परिवार में हिंदी का किस प्रकार भारोपीय ⟶ सतम् यानी भारत–ईरानी ⟶ प्राचीन भारतीय आर्यभाषा – संस्कृत ⟶ मध्यकालीन आर्यभाषा (पाली) ⟶ प्राकृत ⟶ (अपभ्रंश) से व्युत्पत्तिगत संबंध है तथा यह शौरसेनी + मागधी + अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई 5 उपभाषाओं एवं 18 बोलियों के संकुल के रूप में स्थापित है। इसके सिवाय यह भी उल्लेख किया गया है कि हिंदी की **खड़ीबोली, बाँगरू, ब्रज, उर्दू** आदि बोलियों के संयोग से हिंदी का एक मानक रूप भी विकसित हुआ है जो ऐतिहासिक कारणों से विगत 200 वर्षों में विश्व के भाषायी मानचित्र में अपनी अंतर्राष्ट्रीय जगह भी बना चुका है।

- हिंदी का यही रूप भारत की राष्ट्रभाषा और भारत संघ एवं 10 राज्यों की राजभाषा के रूप में पत्रकारिता एवं शिक्षा के माध्यम के रूप में मान्य है।
- अब प्रश्न यह उठता है कि हिंदी का उद्‌भव शौरसेनी-मागधी-अर्द्धमागधी अपभ्रंशों (अवहट्‌ट) से (1000 ई. में) होने के बाद पिछले 1000 वर्षों में इसका विकास कैसे हुआ। हिंदी भाषा के विकास के इस 1000 वर्ष के इतिहास को 3 भागों में बाँटा गया है—(क) प्रारंभिक काल (1000 ई. से 1500 ई.), (ख) मध्यकाल (1500 ई. से 1800 ई.) तथा (ग) आधुनिक काल (1800 ई. से वर्तमान तक)।

प्रारंभिक काल (1000 ई. से 1500 ई.)

हिंदी के जन्मकाल का निर्धारण

- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं की अंतिम कड़ी- अपभ्रंश से आधुनिक आर्यभाषाओं– हिंदी, पंजाबी, गुजराती, बांगला आदि का जन्म कब हुआ और उसमें भी हिंदी का जन्म-काल क्या था, इस सन्दर्भ में विद्वानों के अलग-अलग विचार, तर्क एवं प्रमाण हैं।
- हिंदी के उद्‌भव के बारे में **रामचन्द्र शुक्ल** के अनुसार ''अपभ्रंश या प्राकृताभास हिंदी के पद्यों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों की सांप्रदायिक रचनाओं के भीतर विक्रम की सातवीं शताब्दी के अंतिम चरण से लगता है। मुंज और भोज के समय (संवत् 1050 के लगभग) में तो ऐसी अपभ्रंश या पुरानी हिंदी का पूरा प्रचार शुद्ध साहित्य या काव्य-रचनाओं में भी पाया जाता है।
- **हजारी प्रसाद द्विवेदी** के अनुसार ''हेमचंद्राचार्य (1088-1172) ने दो प्रकार की अपभ्रंश भाषाओं की चर्चा की है। दूसरी श्रेणी की भाषाओं को हेमचन्द्र ने ग्राम्य कहा है।
- यही भाषा आगे चलकर आधुनिक देशी भाषाओं के रूप मे विकसित हुई।
- **धीरेन्द्र वर्मा** के अनुसार ''1000 ई. के बाद मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा के अंतिम रूप-अपभ्रंश ने धीरे-धीरे बदलकर आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का रूप ग्रहण कर लिया...।''
- **चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'** के अनुसार, ''7वीं से 11वीं शताब्दी तक अपभ्रंश की प्रधानता रही, फिर वह पुरानी हिंदी में परिणत हो गई।''
- **भोलानाथ** तिवारी के अनुसार ''यों तो हिंदी के कुछ रूप पालि में भी मिलने लगते हैं, प्राकृत में उनकी संख्या और भी बढ़ जाती है तथा अपभ्रंश में उनमें और भी वृद्धि हो गई है किंतु सब-मिलाकर इनका प्रतिशत इतना कम है कि 1000 ई. के पूर्व हिंदी का उद्‌भव नहीं माना जा सकता... साहित्य में भाषा का प्रयोग जन्म के साथ ही नहीं हो जाता .... इस तरह यदि लगभग 1150 ई. के आसपास भी हिंदी साहित्य मिले तो भी उस भाषा का आंरम्भ 1000 ई. के आसपास ही मानना पड़ेगा।''
- भाषा का जन्म अचानक नहीं होता, वह एक सतत् विकास के जरिए अपना रूप प्राप्त करती है या रूप खोती है।
- हिंदी के लक्षण पालि साहित्य में भले ही मिलने लगते हों और प्राकृत तथा अपभ्रंश में क्रमशः बढ़ते गए हों लेकिन हिंदी की अपनी विशेषताओं का वह अनुपात 1000 ई. के आसपास इतना बढ़ा प्रतीत होता है कि उसे अपभ्रंश से भिन्न नई भाषा हिंदी कहा जा सकता है।
- भाषा–विकास के प्रवाह में जनभाषा आगे चलती है। भाषा परिवर्तन पहले जनभाषा में होने लगते हैं, उन परिवर्तनों के स्थायी होने पर फिर उनका प्रयोग साहित्य में होने लगता है। हिंदी के विकास में यदि सन् 1150 ई. के आसपास लिखे साहित्य में अपभ्रंश का अस्त होना और हिंदी का उदय होना झलकता है तो जनभाषा में ये परिवर्तन 1000 ई. के आसपास ही हुए होंगे।

प्रारंभिक काल में हिंदी का विकास

- हालांकि हिंदी का प्रयोग जनभाषा के रूप में 1000 ई. के आसपास से माना जा सकता है, परन्तु जिस साहित्य में उसका प्रारंभिक लिखित रूप मिलता है, उसमें 'राउलबेल' (1100 ई.), नरपति नाल्ह का 'बीसलदेव रासो' (1155ई.), चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' (1168 से 1192 ई.), सनेहय रासय (संदेश रासक 1132 से 1182 ई.), खुसरो का काव्य (1325 ई. से पहले), गोरखबानी (10वीं शताब्दी), कबीर साहित्य (1423 ई.) प्रमुख हैं।
- विद्यापति, ख्वाजा बंदा नेवाज तथा शाह मीराजी के साहित्य ने भी हिंदी के प्रारंभिक काल को स्वरूप प्रदान किया है। इस युग में लिखे नाथ, सिद्ध और जैन साहित्य ने जनभाषा में साहित्य रचकर हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। डिंगल, मैथिली, दक्खिनी, अवधी, ब्रज आदि बोलियों में भी काफी साहित्य लिखा गया है।
- इस युग की हिंदी भाषा में अपभ्रंश से जो नवीन प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं, वे निम्नवत् हैं–

ध्वनि

अपभ्रंश प्रवृत्तियाँ	प्रारम्भिककालीन हिंदी
• अपभ्रंश में आठ स्वर थे– **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए औ**	अपभ्रंश के आठ स्वरों के अलावा दो नए स्वर **ऐ, औ** और विकसित हो गए।
• अपभ्रंश में **च, छ, ज, झ** स्पर्श व्यंजन थे।	ये व्यंजन **स्पर्श-संघर्षी** हो गए।
• **न, ल, स** दंत्य ध्वनियाँ थीं।	दंत्य से **वर्त्स्य** हो गईं।
• अपभ्रंश में ड़, ढ़ नहीं।	हिंदी में **ड़, ढ़** व्यंजनों का विकास हुआ।
• **न्ह, म्ह, र्ह, ल्ह** संयुक्त व्यंजन थे।	**न, म, र, ल** के **महाप्राण रूप** बन गए अर्थात् संयुक्त व्यंजन से मूल व्यंजन हो गए।
• द्वित्व व्यंजनों का आधिक्य	अपभ्रंश के द्वित्व व्यंजन एकल व्यंजनों में बदलने लगे। (**कम्म ⟶ काम**) अरबी–फारसी के संपर्क से कुछ अपभ्रंश शब्दों के लोप से कुछ संयुक्त व्यंजन, स्वरानुक्रम एवं व्यंजनानुक्रम लुप्त हो गए।

व्याकरण

क्रिया एवं संज्ञा रूप **संयोगात्मक** अधिक थे।	क्रिया एवं संज्ञा रूप **वियोगात्मक** हो गए, शब्द से अलग परसर्गों, सहायक क्रियाओं का विकास हुआ।
संस्कृत की परम्परा में अपभ्रंश में नपुंसक लिंग के अंश थे।	हिंदी में नपुंसक लिंग समाप्त हो गया, इसके शब्द पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में विभाजित हो गए।
वाक्य में शब्द-क्रम पूरी तरह निश्चित नहीं था।	शब्द-क्रम निश्चित हो गया।
क्रियाओं में लिंग परिवर्तन पूरी तरह नहीं हुए।	यह परिवर्तन पूर्ण रूप से होने लगा।
अपभ्रंश की बोलियों में एकरूपता अधिक थी।	हिंदी की बोलियों के रूप अधिक स्पष्ट होने लगे।

शब्द-भण्डार

तत्सम शब्द कम थे।	भक्ति आंदोलन के आचार्यों के प्रभाव से साहित्य में संस्कृत के तत्सम शब्दों में वृद्धि होने लगी।
अपभ्रंश में संस्कृत स्रोत के तद्भव शब्दों का आधिक्य था।	मुसलमानों के आगमन और शासन के कारण अरबी–फारसी के शब्दों में वृद्धि हुई। अपभ्रंश की बहुत-सी शब्दावली प्रयोग से बाहर हो गईं या फिर प्रयोग कम होने लगा।

मध्यकाल (1500 ई. से 1800 ई.)

- यह काल हिंदी प्रदेश में राजनीतिक दृष्टि से मुगलों एवं उनके अधीन सामंतों के शासन-काल का है तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टि से भक्ति और रीतिपरक रचनाओं का है।
- इस युग में हिंदी की अवधी, ब्रज तथा खड़ीबोली में अधिक रचनाएँ लिखी गईं। **अवधी** में मुल्ला दाउद, जायसी, कुतुबन, तुलसीदास, ब्रज में सूरदास, नंददास, तुलसीदास, केशव, बिहारी, रसखान, घनानंद; **खड़ीबोली** तथा **मिश्रित भाषा** में कबीर, रहीम, आलम, नागरीदास, रैदास, मीरा और **उर्दू** में वली, बुरहानुद्दीन, नुसरती, कुली, कुतुबशाह आदि श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं ने हिंदी के मध्यकाल को इतना समृद्ध किया है कि वह हिंदी साहित्य का उत्कृष्ट काल बन गया है तथा इसी के फलस्वरूप हिंदी आधुनिक काल में राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त कर सकी है। मध्यकालीन हिंदी की भाषागत प्रवृत्तियाँ निम्नवत् हैं–

ध्वनि

- शब्द के अंत और मध्य में मूल व्यंजन के साथ आने वाला अ स्वर लुप्त होने लगा, जैसे– **राम → राम्** तथा **जपता → जप्ता** हो गया। वर्तमान हिंदी में भी यही प्रवृत्ति है– **काम् (काम), जन्ता (जनता)**।
- अरबी–फ़ारसी के संपर्क से उसके व्यंजन **क़, ख़, ग़, ज़, फ़** हिंदी में भी बोले जाने लगे।

व्याकरण

- प्रारंभिककालीन हिंदी से मध्यकालीन हिंदी अधिक क्लिष्ट हो गई। परसर्ग 'ने' का तथा सहायक क्रियाओं का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होने लगा।
- अरबी–फारसी की वाक्य-रचना का प्रभाव हिंदी पर पड़ने लगा। **'कि'** संयोजक शब्द फारसी का है जो हिंदी में भी अब प्रयुक्त होने लगा।
- हिंदी का स्वयं का ही व्याकरण विकसित हो गया और अपभ्रंश व्याकरण की विशेषताएँ लुप्त हो गईं।

शब्द-भण्डार

- अरबी–फारसी के लगभग 6,000 शब्द हिंदी में प्रयोग होने लगे। फारसी के मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ भी प्रयुक्त होने लगीं।
- भक्ति आंदोलन के प्रभाव से पौराणिक विषयों तथा संस्कृत ग्रंथों को आधार बनाकर साहित्य लिखने से हिंदी में तत्सम शब्द की वृद्धि काफी हो गई।
- यूरोप के लोगों के संपर्क से पुर्तगाली, फ्रांसीसी, स्पेनिश तथा अंग्रेजी के शब्द भी हिंदी में प्रयोग किये जाने लगे।

आधुनिक काल (1800 ई. से वर्तमान तक)

- हिंदी के विकास की दृष्टि से आधुनिक काल काफी महत्वपूर्ण है। भारत की सांस्कृतिक एकता को व्यक्त करने वाली भाषा के रूप में तो हिंदी आधुनिक युग से पूर्व ही प्रतिष्ठित हो चली थी परन्तु आधुनिक काल में 1800 ई. के पश्चात् पहले ब्रिटिश शासन के प्रसार के फलस्वरूप और उसके बाद उसके विरुद्ध, स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष से भारत की सांस्कृतिक–राजनीतिक–प्रशासनिक अस्मिता को प्राप्त करने के लक्ष्य से भारत की अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी एक अधिक सामर्थ्यवान और व्यावहारिक भाषा के रूप में स्थापित हुई।
- आधुनिक युग हिंदी के विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है। अपनी सारी सीमाओं के बावजूद हिंदी ने विगत 200 वर्षों में जितना विकास किया है। वह विश्व के भाषा–विकास में काफी महत्वपूर्ण है।
- आधुनिक काल में जिन-जिन रचनाकारों ने अपना योगदान दिया है, उसकी सूची काफी लंबी है। साहित्य के क्षेत्र में भारतेंदु युग से ही हिंदी ने भाषा–व्यवहार के हर क्षेत्र में अपना विकास करना प्रारंभ किया तथा वह द्विवेदी काल, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता से गुजरती हुई वर्तमान तक पहुँची है। साहित्य, पत्रकारिता, अध्ययन-अध्यापन शोध, राजकार्य आदि के क्षेत्र में इसने काफी प्रगति की है।
- हिंदी भाषियों और अहिंदी भाषियों दोनों ने उसके विकास को समृद्ध किया है। आधुनिक काल की भाषा प्रवृत्तियों का संक्षेप में वर्णन अत्यंत कठिन है, फिर भी मोटे रूप में इसके लक्षण निम्नवत् हैं–

ध्वनि

- अरबी–फारसी की **क़, ख़, ग़, ज़, फ़** ध्वनियों का प्रचलन उर्दू बोलने वाले लोगों में अधिक है; किन्तु **ज़** तथा **फ़** ध्वनियाँ तो अंग्रेजी शब्दों में भी होने के कारण बहुत बोली जाती हैं, जैसे–**प्लीज़, फ़ेल** आदि।
- हिंदी में अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग होने से ड संयुक्त व्यंजन बोला जाने लगा है, जैसे–**ड्रिल, ड्राइवर** आदि।
- आधुनिक युग में अंग्रेजी का प्रसार बढ़ने से अंग्रेजी शब्दों के उच्चारण में ऑ स्वर प्रचलन में है, जैसे–**डॉक्टर, ऑफिस** आदि।
- **ऐ** तथा **औ** स्वर जो हिंदी के प्रारंभिक काल में **अए** तथा **अओ** उच्चरित होते थे, वर्तमान में कहीं-कहीं **अइ, अउ** तो कहीं **अए, अओ** के रूप में उच्चरित होते हैं किन्तु मानक भाषा में ये मूल स्वर के रूप में उच्चरित होते हैं जबकि बिहारी और पूर्वी हिंदी की बोलियों में संयुक्त स्वर के रूप में उच्चरित होते हैं।

व्याकरण

- हिंदी की विभिन्न बोलियों की व्याकरणिक संरचनाएँ इतनी स्पष्ट हो गई हैं कि उनमें से कुछ को तो स्वतंत्र भाषा के रूप में पहचाना जा सकता है, जैसे– ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी आदि।
- हिंदी की प्रकृति अब पूर्णतः क्लिष्टतात्मक हो चुकी है।
- मुद्रण, शिक्षा, रेडिओ, फिल्म, दूरदर्शन आदि के सहयोग से हिंदी के मानक स्वरूप का व्याकरण अब सुनिश्चित हो चुका है।
- अंग्रेजी के प्रभाव से हिंदी की शब्द-रचना एवं वाक्य-रचना अंग्रेजी व्याकरण से प्रभावित हुई है।
- आधुनिक काल में गद्य का प्रयोग एक-साथ तेजी से बढ़ा है। अतः गद्य की अपेक्षानुसार हिंदी के व्याकरणिक प्रयोगों में विविधता आई है।

शब्द-भण्डार

- हिंदी में संस्कृत, अरबी-फारसी, अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से उदारतापूर्वक शब्द लिए गए हैं, अतः हिंदी शब्दावली में तेजी से वृद्धि हुई है।
- ज्ञान-विज्ञान से सभी क्षेत्रों में हिंदी का व्यवहार बढ़ाने के लिए 5 लाख से अधिक तकनीकी शब्दों का निर्माण किया गया है और अब वे प्रचलन में आ रहे हैं।
- हिंदी में शब्दों को खपाने की प्रवृत्ति बढ़ी है किंतु अपनी ही बोलियों के शब्दों को प्रयोग में लाने में काफी संकोच है, परिणामस्वरूप हिंदी की रवानगी व जीवंतता प्रभावित हुई है। इस प्रकार हिंदी विगत 1000 वर्षों में जिस मंजिल पर पहुँची है वह पीछे लौटकर देखने पर बहुत अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक लगता है, किंतु अब हिंदी जहाँ है और जो भूमिकाएँ उसको प्राप्त हुई हैं उन्हें देखते हुए उसके विकास की गति और दिशा दोनों में तीव्र परिवर्तन लाने की जरूरत है। उसे न केवल राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में सशक्त होना है, बल्कि आधुनिक हिंदी भाषी व्यक्ति के भाषा विकास को विश्व की किसी भी विकसित भाषा के व्यक्ति की तुलना में खड़ा करना है। भाषा मनुष्य की चेतना के विकास की सहगामिनी होती है, अतः हिंदी भाषी व्यक्ति की आधुनिक चेतना का ज्ञान–विज्ञान व्यवहार के सभी क्षेत्रों में अपेक्षित विकास हिंदी कर सके. यही उसकी मूलभूत चुनौती है।

हिंदी की बोलियाँ

- भाषा और बोली में मुख्य भेद संप्रेषणगत भिन्नता और समानता को लेकर है। एक भाषा और दूसरी भाषा के बीच संरचनागत भेद इतना अधिक होता है कि सामान्यतः उनके बोलने वाले एक-दूसरे को नहीं समझ पाते परन्तु एक भाषा के अंतर्गत जो संरचनागत भिन्नताएं होती हैं, वे इतनी ज्यादा नहीं होतीं कि परस्पर संप्रेषण बिल्कुल ही न हो सके। इस प्रकार शब्दावली एवं संरचनागत समानताओं के आधार पर अनेक बोलियों का एक संकुल 'भाषा' कहलाता है।
- हर भाषा में उसकी किसी एक बोली से उसका एक मानक रूप विकसित हो जाता है जो साहित्य, प्रशासन, शिक्षा आदि में अपना लिया जाता है।
- हिंदी भी शब्दावली एवं संरचनागत समानताओं के आधार पर भारत की अन्य भाषाओं– पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि भाषाओं से भिन्न एक स्वतंत्र भाषा है, किंतु यह हिंदी प्रदेश की विविध बोलियों का एक संकुल भी है।
- चीनी और अंग्रेजी के बाद दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसकी 5 तो उपभाषाएँ हैं– पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, पहाड़ी और बिहारी, फिर इन भाषाओं की बोलियाँ हैं, इनका वर्गीकरण निम्नवत् है–

अपभ्रंश, हिंदी की उपभाषाएँ और हिंदी की बोलियाँ

अपभ्रंश रूप	शौरसेनी	शौरसेनी	शौरसेनी	अर्द्धमागधी	मागधी
उपभाषाएँ	**पश्चिमी हिंदी**	**राजस्थानी**	**पहाड़ी**	**पूर्वी हिंदी**	**बिहारी**
हिंदी की बोलियाँ	(i) खड़ी बोली (कोरवी)	(i) मारवाड़ी	(i) गढ़वाली	(i) अवधी	(i) भोजपुरी
	(ii) ब्रज भाषा		(ii) कुमायुँनी	(ii) बघेली	(ii) मैथिली
	(iii) बाँगरू (हरियाणवी)	(ii) ढूँढाड़ी (जयपुरी)	(iii) प. पहाड़ी (नेपाली)	(iii) छत्तीसगढ़ी	(iii) मगही
	(iv) बुंदेली	(iii) मेवाती			
	(v) कन्नौजी	(iv) मालवी			

- 'गिलक्राउस्ट ने खड़ीबोली को टकसाली भाषा कहा है।
- बाबूराम सक्सेना ने दक्खिनी हिंदी के 'खड़ी–बोली' का विकसित रूप माना है।
- 3 अपभ्रंशों से निकली हुई 18 बोलियाँ, उनके 5 उपभाषा समूहों तथा एक मानक भाषा खड़ी बोली के समूहगत रूप को हिंदी भाषा के रूप में जाना जाता है। इन बोलियों का विवरण संक्षेप में निम्नलिखित है।

पश्चिमी हिंदी

खड़ी बोली–खड़ीबोली के अनेक नाम हैं– हिंदुस्तानी, कौरवी, सरहिंदी, खड़ी बोली। ब्रज भाषा की तुलना में यह बोली खड़ी-खड़ी लगती है। संभवतः इसी कारण इसे खड़ीबोली कहा जाता है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।

- इसका नामकरण लल्लूलाल मिश्र ने 1803 ई. में 'प्रेमसागर' की भूमिका में किया।
- यह दिल्ली के उत्तर-पूर्व से लेकर हिमालय की तराई तक– रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, अंबाला तथा जगाधरी में बोली जाती हैं।
- खड़ीबोली पश्चिमी हिंदी उपभाषा के अन्तर्गत आती है।
- 'अमीर खुसरो' खड़ीबोली हिंदी के प्रथम लोकप्रिय कवि हैं।
- 'खड़ीबोली' में कर्त्ताकारक के लिए 'ने' परसर्ग लगाया जाता है।
- आधुनिक रूप में खड़ी बोली का विकास 1800 ई. से स्वीकार किया गया है।

- ग्रियर्सन ने 'खड़ीबोली' को 'देशी हिन्दुस्तानी' कहा है।

ब्रजभाषा—इसे अंतर्वेदी भी कहते हैं। ब्रज का आशय पशुओं के समूह या चरागाह से लिया जाता है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।

- तुलसीकृत कवितावली, विनयपत्रिका, व गीतावली की भाषा 'ब्रज' है।
- प्रारम्भ में 'पिंगल' नाम ब्रजभाषा के लिए प्रयुक्त होता है।
- ब्रजभाषा को 'ब्रजबुलि' नाम से भी जाना जाता है।
- यह राजस्थान में भरतपुर, करौली, धौलपुर जिलों में, मध्य प्रदेश में ग्वालियर जिले में और उत्तर प्रदेश में मथुरा, अलीगढ़, आगरा, बुलंदशहर, एटा, मैनपुरी, बदायूँ तथा बरेली जिलों में बोली जाती है।
- 'आयौ' शब्द ब्रजभाषा का है।
- ब्रजभाषा काव्य भाषा के रूप/में सबसे अधिक प्रसिद्ध है।
- सूरदास ब्रजभाषा के कवि हैं।

बाँगरू (हरियाणवी)—इसे हरियाणवी भी कहते हैं। बाँगर (शुष्क, उच्च भूमि) भू-भाग के कारण यहाँ की बोली का नाम बाँगरू पड़ा।

- इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। हरियाणा प्रदेश के करनाल, रोहतक, हिसार तथा दिल्ली के क्षेत्र इसके अंतर्गत आते हैं। इस बोली में लोक साहित्य की रचना बहुत हुई है।

बुंदेली—बुंदेल-भूमि में बोली जाने के कारण बुंदेली या बुंदेलखंडी कहा जाता है। यह भी शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है।

- यह उत्तर प्रदेश के जालौन, हमीरपुर, झाँसी, बाँदा जिलों में तथा मध्य प्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दमोह, सागर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, भिंड, दतिया, ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना, गुना, विदिशा तथा रायसेन जिलों में बोली जाती है।
- बुंदेली का विकास 'अर्द्ध मागधी' अपभ्रंश से नहीं हुआ है।

कन्नौजी—उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जनपद के कन्नौज क्षेत्र के नाम के आधार पर इस क्षेत्र की बोली को कन्नौजी कहा जाता है।

- कन्नौजी और ब्रज में पर्याप्त समानता है। कन्नौजी में अलग से साहित्य की रचना नहीं हुई। इस क्षेत्र के रचनाकारों में चिंतामणि, भूषण, मतिराम, नीलकंठ प्रमुख हैं।

राजस्थानी

- हिंदी की इन बोलियों के सिवाय राजस्थानी की भी बोलियाँ हिंदी भाषा में ही शामिल की गई हैं।
- कुछ विद्वान राजस्थानी की चार बोलियाँ ही मानते हैं। जबकि राजस्थान के विस्तृत भू-भाग और जन-संपर्क की कठिनाइयों के कारण राजस्थान की बोलियों में इतनी विविधता है कि उसकी कम-से-कम 7 बोलियाँ (मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूँढ़ाणी, हड़ौती, मेवाती, बागड़ी तथा मालवी) तो माननी ही होंगी।
- मीरावाई की काव्य–रचना की भाषा 'राजस्थानी' है।
- मालवी 'बोली' हिंदी के 'राजस्थानी' वर्ग की बोली है।

मारवाड़ी—मारवाड़ी बोली का उल्लेख कुवलयमाला (778 ई.) में **मरुभाषा** के नाम से हुआ है।

- इस बोली क्षेत्र के अपने ऐसे ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अनुभव रहे हैं कि इसने पिछले 1000 वर्ष से भाषागत संरचना एवं साहित्यिक रचना दोनों ही दृष्टियों से अपनी पहचान स्थापित कर रखी है।
- **मारवाड़ी** नागौर, पाली, जोधपुर, सिरोही, जालौर, बाडमेर, जैसलमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूं और सीकर जिले में बोली जाती है।
- इसका परिनिष्ठित रूप जोधपुर के आसपास का है। इस बोली का क्षेत्र राजस्थानी की अन्य बोलियों के क्षेत्र के योग से भी बड़ा है।
- मारवाड़ी की अनेक उप-बोलियाँ भी हैं, जैसे– थली, ढटकी, महेश्री, ओसवाली, बीकानेरी, नागौरी, गोड़वाड़ी आदि। मारवाड़ी में वीर, श्रृंगार, भक्ति, नीति के श्रेष्ठ साहित्य का भंडार है।
- इसकी डिंगल शैली भाषातात्विक दृष्टि से बहुत रोचक है क्योंकि इसने वीर रसात्मक एवं ध्वन्यात्मक प्रस्तुतियों की दृष्टि से विश्व भाषाओं में अपना प्रतिमान स्थापित किया है।
- डिंगल कोई अलग भाषा नहीं बल्कि मारवाड़ी की ही साहित्यिक शैली है, जिसमें यहाँ के चारण कवियों ने बहुत साहित्य लिखा है। मारवाड़ी की भाषा संरचनागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

ध्वनि

- **ऐ** और **औ** का उच्चारण तत्सम शब्दों में– **अई, अए** और **अउ, अओ** जैसा होता है।
- अनेक स्थानों में **च्** और **छ्** का उच्चारण प्रायः **स्** हो जाता है, जैसे– **छाछ → सास, चक्की → सक्की।**
- शब्द के प्रारंभ की **स्** ध्वनि **ह्** उच्चरित होती है, जैसे– **सड़क → हड़क, साथ → हाथ** आदि।
- **न** के स्थान पर **ण** तथा **ल** के स्थान पर **ळ** उच्चरित होते हैं, जैसे– **पानी → पाणी, काला → काळा** आदि।
- हकार का लोप होता है– **कहयो → कयो, रहणो → रैणो** आदि।
- मारवाड़ी बोली प्रारम्भिक 'स' व्यंजन 'ह' में बदल गया है।

व्याकरण

- परसर्गों में कर्म-सम्प्रदान के स्थान पर **नै, ने, कने, रै** तथा करण–अपादान : **सूँ ऊँ,** सम्बन्ध : **रो, रा, री, नो** को अधिकरण : **में, माँ, माई** का चलन है।
- **ही** के अर्थ में **हीज, ईज प्रत्यय** चलता है।
- शब्द के बीच में ईज प्रत्यय लगाकर कर्मणि वाच्य बनाया जाता है, जैसे– **मारणो = मारना, मरीजणो = मारा जाना** आदि।
- वर्तमान काल की सहायक क्रिया है, भूतकाल की सहायक क्रिया हो तथा भविष्यकाल की सहायक क्रिया **स्यूँ/लो** लगाकर कालवाचक क्रिया रूप बनते हैं।
- तृतीया और सप्तमी के शब्द रूप समान होते हैं।

शब्द-भंडार

- मारवाड़ी में तद्भव एवं देशज शब्दों का भंडार है। **डीकरो** (पुत्र), **गण्डक** (कुत्ता), **करसो** (किसान), **माची** (खाट), **जीमणो** (भोजन करनेवाला, दायाँ) आदि।
- मारवाड़ी की लिपि **महाजनी** रही है किंतु अब यह देवनागरी में लिखी जा रही है।

ध्यान दें—मेवाड़ क्षेत्र की बोली को मेवाड़ी कहा जाता है। ग्रियर्सन, चटर्जी, मोतीलाल मेनारिया, नरोत्तम स्वामी आदि ने **मेवाड़ी** को मारवाड़ी की ही उपबोली के रूप में स्वीकार किया है।

- मेवाड़ी उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और प्रतापगढ़ जिलों में बोली जाती है।

- मेवाड़ी बोली की संरचनागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
  - मेवाड़ी में **ऐ** तथा **औ** स्वर नहीं है, **ऐ** को **ए** तथा **औ** को **ओ** ही बोला जाता है।
  - वणी सर्वनाम का प्रयोग इसकी अपनी विशेषता है, मारवाड़ी में इसके स्थान पर **उणनै** प्रचलित है।
  - **इ** स्वर का आगमन बहुत होता है, जैसे– **गियो** (गया), **मिलियो** (मिलना), **पढ़ियो** (पढ़ना), **किवै** (कहते हैं) आदि।

ढूँढाड़ी (जयपुरी)—ढूँढ यानी(टीला) शब्द से ढूँढाड़ी शब्द बना है। जयपुर के आस-पास ढूँढ नदी भी है। ढूँढाड़ी को **जयपुरी** एवं **झाड़साही** भी का जाता है। यह जयपुर, टोंक, दौसा, जिलों में बोली जाती है।

- इस बोली की भाषा संरचनागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
  - इस बोली की मुख्य पहचान इसकी **छै, छू, छा, छो, छी** सहायक क्रियाएँ हैं।
  - भविष्यत्काल के लिए **लो, लाँ, स्यूँ, सी** कृदन्त का प्रयोग होता है।
  - नाम रूप ओकारान्त हो जाता है– **छोरो, बेरो** आदि।
  - **काँई, कोड़ै** तथा **जद** (जब), **कद** (कब) ढूँढाड़ी के अपने सर्वनाम हैं।
  - संबंधकारक **का/के/की** प्रचलित हैं।
  - **न्यो** कृदन्त **दीन्यो**, **लीन्यो** रूप में चलता है।
  - अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति है– **आधा → आदो, जीभ → जीब।**
  - **ह** ध्वनि का लोप हो जाता है, जैसे **शहर → सैर।**

मेवाती—यह मेवात क्षेत्र की बोली है। यह पश्चिमी हिंदी एवं राजस्थानी के बीच सेतु के रूप में कार्य कर रही है। राठी, महेड़ा और कठेर उसकी उपबोलियाँ हैं।

- **अहीरवाटी** बोली को भी मेवाती की बोली ही माना जाता है। वस्तुतः अहीरवाटी बाँगरू और मेवाती के बीच की बोली है।
- मेवाती बोली अलवर तथा भरतपुर के उत्तर–दक्षिण में तथा गुड़गाँव के दक्षिण में बोली जाती है।
- इस बोली की विशेषताएँ निम्नवत् हैं–
  - मेवाती में ने परसर्ग का प्रयोग कर्म–सम्प्रदान में मिलता है।
  - अपादान परसर्ग तै का प्रयोग मिलता है।
  - मेवाती में कर्मकारक में **लू** विभक्ति एवं भूतकाल में **हा, हो, ही** सहायक क्रिया का प्रयोग विशेष उल्लेखनीय है।
  - महाप्राण ध्वनि **ह** में बदल जाती है।

मालवी—राजस्थान में झालावाड़ की कुछ तहसीलों में तथा शेष मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में **मालवी** बोली जाती है।

- इंदौर, उज्जैन, देवास, भोपाल, भोजावाड़, रतलाम, झाबुवा, सीतामऊ और मेवाड़ के कुछ भाग भी मालवी के क्षेत्र हैं।
- मालवी की उपबोलियाँ हैं– निमाड़ी, उमठवाड़ी, रतलामी, सोधवाड़ी आदि।
- मालवी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
  - **ऐ** का **ए** तथा **औ** का **ओ** में परिवर्तन हो जाता है, जैसे– **चैन → चेन, सौ → सो, पैसा → पेसा।**
  - **इ, उ, अ** ध्वनियाँ आपस में बदलती रहती हैं।
  - मध्य एवं अंत में आने वाले **ड़** का उच्चारण **ड** होता है।
  - **ह** के स्थान पर य या **व** ध्वनि मिलती है अथवा उसका लोप हो जाता है, जैसे– **मोहन → मोयन, लुहार → लुवार** आदि।
  - संज्ञा और सर्वनाम के रूप राजस्थानी के ही समान हैं। बहुवचन बनाने में कभी-कभी होर-होरो, होन आदि का प्रयोग किया जाता है, जैसे **मर्द होर** आदि।
  - सहायक क्रिया के भूतकालिक रूप **था, थे, थी** हैं।

पहाड़ी

गढ़वाली—गढ़वाल को **केदारखंड** के नाम से जाना जाता है। यह उत्तराखंड के गढ़वाल, टेहरी, चमोली तथा उत्तरकाशी जिलों में बोली जाती है। इस बोली की रमोला 'लोक साहित्य, काफी प्रसिद्ध रचना है।

कुमायूँनी—उत्तराखंड प्रदेश के कुमायूँ क्षेत्र के नाम पर इस बोली का नाम पड़ा है। यह उत्तराखंड प्रदेश के अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़ जिलों में बोली जाती है।

पश्चिमी पहाड़ी (नेपाली)—पहाड़ी की पश्चिमी बोलियों के समूह का नाम पश्चिमी पहाड़ी है। यह भद्रवाह, चंबा मंडी, शिमला, चकराता, लाहुल-स्पिति कुल्लू-मनाली में बोली जाती है।

- इसकी प्रमुख उपबोलियाँ जौनसारी, सिरमौरी, बघाटी, चमेआली, क्योंठली हैं। इनके अतिरिक्त सतलुज वर्ग की बोलियाँ, मंडी वर्ग की बोलियाँ, कुल्लू वर्ग की बोलियाँ तथा भद्रवाह वर्ग की बोलियाँ भी इनमें सम्मिलित हैं। इनकी लिपि पहले **टाकरी** थी किंतु अब **देवनागरी** है।

पूर्वी हिंदी

- बघेली बोली का अपना स्वतन्त्र साहित्य नहीं है।
- पूर्वी हिंदी का उद्भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।

अवधी—अवधी का तात्पर्य है–अवध क्षेत्र की भाषा। इसका विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।

- यह उत्तर प्रदेश के लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, बाराबंकी, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, फैजाबाद, फतेहपुर, प्रयाग, मिर्जापुर, जौनपुर, लखीमपुर खीरी जनपदों में बोली जाती है।
- जायसी के **पद्मावत्** की भाषा 'अवधी' है।
- अवधी दूसरा नाम 'बैसवाड़ी' बोली है।

बघेली—बघेलखंड क्षेत्र में बोली जाने के कारण इसे **'बघेली'** कहा जाता है।

- यह अवधी की ही एक उपबोली के रूप में है परंतु लोकमत उसे स्वतंत्र बोली मानता है। यह भी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। यह रीवाँ, शहडोल, सतना, सीधी जिलों में तथा जबलपुर और बाँदा जिलों के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

छत्तीसगढ़ी—छत्तीसगढ़ जनपद में बोली जाने के कारण इसका नाम छत्तीसगढ़ी पड़ा है। इसका विकास भी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।

- यह छत्तीसगढ़ प्रदेश के सरगुजा, रायगढ़, विलासपुर, रायपुर, दुर्ग, राजनाद गाँव और बस्तर जिलों में बोली जाती है।

बिहारी

मैथिली—मैथिली बिहार प्रदेश में गंगा के ऊपरी क्षेत्र की भाषा है, जिसे **मिथिला** के नाम से भी जाना जाता है। इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है।

- यह बिहार के दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मुंगेर तथा भागलपुर जिलों में बोली जाती है।
- विद्यापति और गोविंददास इसके प्रसिद्ध कवि रहे हैं।

भोजपुरी–भोजपुरी बिहारी की महत्वपूर्ण बोली है। राजा भोज द्वारा बसाए गए भोजपुर नगर के नाम पर भोजपुरी बोली का नामकरण हुआ।

- यह बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, शाहाबाद, चंपारन, सारन तथा छोटा नागपुर में बोली जाती है। भोजपुरी पूर्वांचल की मुख्य बोली है।

मगही–मगही मागधी का अपभ्रंश है। अतः मगही का तात्पर्य है– मगध की बोली। यह मागधी अपभ्रंश से ही निकली है।

- यह पटना, गया तथा हजारीबाग जिलों में बोली जाती है।

हिंदी का मानक रूप

- हिंदी के मुख्यतः दो रूप हैं–(i) क्षेत्रीय बोलियों का संकुल (ii) मानक हिंदी।
- क्षेत्रीय बोलियों के संकुल के रूप में यह हिंदी क्षेत्र की समस्त बोलियों के समूह का प्रतिनिधित्व करती है, लेकिन हिंदी का एक अर्थ उसके मानक रूप से भी है। यह हिंदी का केंद्रवर्ती रूप है। हिंदी की विभिन्न बोलियों के क्षेत्रीय रूप अपना अलग-अलग स्वरूप रखते हुए भी मानक भाषा के रूप में भी होते हैं। हिंदी का यह मानक रूप जिसे **खड़ीबोली** भी कहा जाता है। वस्तुतः केवल कौरवी बोली (खड़ीबोली) जो मेरठ के आसपास बोली जाती है, से ही, विकसित रूप नहीं है; जैसा कि बीम्ज, ग्रियर्सन, सुनीतिकुमार चटर्जी ने माना है।
- इस संबंध में भोलानाथ तिवारी का मत सही प्रतीत होता है कि ''**हरियाणवी, ब्रज** और दिल्ली की **खड़ीबोली**– इन तीनों की विशेषताओं का मिश्रित रूप, जो दिल्ली में राजभाषा **फारसी** की कोमल छाया में विकसित हुआ, आज की मानक खड़ीबोली है, जिसकी तीन शैलियाँ हैं– हिंदुस्तानी, उर्दू, हिंदी।
- हिंदी के इस मिश्रित रूप ने विगत 20 वर्षों में एक-सी शिक्षा के प्रसार, जनसंचार माध्यमों के विस्तार, महानगरों के विकास, मुद्रित अक्षर की व्यापकता तथा साहित्य की वृद्धि, सिनेमा के प्रभाव, राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी नौकरी एवं व्यापार का फैलाव, बहुभाषी सैनिकों की भर्ती, राष्ट्रीय एकता की चेतना का प्रसार आदि से धीरे–धीरे हिंदी के एक ऐसे रूप का विकास हुआ; और उसका व्यापक प्रचलन भी हो गया है जो सम्पूर्ण देश में एवं देश के बाहर भी विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों में समान रूप से समझी जाती है और व्यवहार में ली जाती है।
- कुछ वर्ष पहले तक **मानक हिंदी** किसी की भी मातृभाषा नहीं थी, परंतु अब यह नगरों में नई पीढ़ी की मातृभाषा भी बनती जा रही है।
- इस शताब्दी के शुरू से ही महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में हिंदी के इस मानक स्वरूप के उच्चारण एवं लेखन की एकरूपता के प्रयत्न प्रारंभ हुए थे, उनके द्वारा छेड़े एक अभियान के फलस्वरूप स्थानीयता के कारण आने वाले भाषा प्रयोगों की विविधता में कमी आई है।
- देवनागरी लिपि का भी प्रयत्नपूर्वक मानकीकरण किया गया है।

मानक हिंदी का 'खड़ीबोली' रूप ही भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 343 (1) में** भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है और इसी अनुच्छेद में इसकी लिपि देवनागरी अंगीकार की गई है।

- संविधान के **17वें** भाग में अनुच्छेद **343** से **351** के अंतर्गत 'राजभाषा' से संबंधित प्रावधान हैं जिनमें से कुछ अनुच्छेद हिंदी भाषा से संबंधित अनुच्छेद भी हैं।
- संविधान की आठवीं अनुसूची की 22 राष्ट्रीय भाषाओं में भी हिंदी को सम्मिलित किया गया है।

हिंदी की शैलियाँ

मानक हिंदी की विभिन्न शैलियाँ हैं– हिंदी, उर्दू, (रेख्ता, रेख्ती), हिंदुस्तानी आदि। स्थानीय भौगोलिक विशेषताओं को देखते हुए तो कलकतिया, बंबइया आदि बीसों शैलियाँ हो सकती हैं।

उर्दू

- उर्दू शब्द का मूल आशय है–**शाही शिविर** या **खेमा।** किंतु यह शब्द भाषा के अर्थ में 17वीं शताब्दी के अंत में प्रयुक्त होने लगा।
- उर्दू भाषा का जन्म कुतुबुद्दीन ऐबक के दिल्ली को राजधानी बनाने (1207 ई.) तथा दिल्ली की लोकभाषा में अरबी-फारसी के शब्द-समूह का प्रवेश कराने के साथ ही हो गया था।
- उस समय दिल्ली की लोकभाषा में अरबी-फारसी के शब्द आने से बनी भाषा को **हिंद** (भू-भाग) की होने के कारण हिंदी या फारसी शब्दों से मिश्रित होने के कारण **रेख्ता** कहते थे।
- इस प्रकार हिंदी की इस मिश्रित शैली का जन्म 13वीं शताब्दी से ही हो गया किंतु उसका नामकरण 500 वर्ष बाद 1740 ई. में **मआसिरुल उमरा** में उर्दू में शेर कहे जाने के संदर्भ में आने के साथ हुआ।
- उर्दू के लिए 13वीं से 18वीं शताब्दी तक **हिंदी** नाम चला, 18वीं से 19वीं शताब्दी तक **रेख्ता** भी कहा गया, फोर्ट विलियम कॉलेज में व अन्यत्र भी, उर्दू को **हिंदुस्तानी** भी कहा गया।
- उर्दू और हिंदी में मूल अंतर शब्दावली का है। उर्दू में अरबी-फारसी की शब्दावली पर आग्रह है तो हिंदी में संस्कृत या देशी शब्दों पर।
- ब्रज, हरियाणवी तथा मेरठ की खड़ीबोली के मिश्रण से हिंदी के मानक रूप का विकास हुआ, तो उर्दू के विकास के पीछे भी इन्हीं बोलियों का हाथ है क्योंकि उर्दू और हिंदी का व्याकरण एक-सा है इसलिए उर्दू को हिंदी से अलग भाषा कहना उपयुक्त नहीं है बल्कि यह हिंदी की फारसी-अरबी शब्दावली से युक्त शैली ही है।
- उर्दू में साहित्य लेखन 1700 ई. के आसपास से माना जाता है।
- 1800 ई. से पूर्व के साहित्यकारों में वली, आबरू, हातिम, दर्द, सौदा, मीर आदि हैं तो उनके बाद मोमिन, जौक, गालिब, दाग, हाली, जिगर, इकबाल, फिराक आदि हैं।
- पाकिस्तान बनने के बाद उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा बन गई है।
- उर्दू भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित है और यह उत्तर प्रदेश एवं बिहार की **दूसरी राजभाषा** भी है। भारत व पाकिस्तान दोनों ही देशों में उर्दू में साहित्य रचा जा रहा है।

रेख्ता

- रेख्ता का तात्पर्य है– **बनाना, मिलाना।** 1700 ई. से कुछ पूर्व से 1800 ई. से कुछ पूर्व तक उर्दू की परिभाषा रेख्ता कही गई, क्योंकि हिंदी व्याकरण में अरबी-फारसी शब्दावली मिलाकर रचना की जा रही थी।
- गालिब और उनके पूर्व के कवियों द्वारा रेख्ता का इसी अर्थ में प्रयोग किया गया है। स्त्रियों की इस मिश्रित भाषा को रेख्ती के नाम से जाना जाता है।

हिंदुस्तानी

- हिंदुस्तानी का भाषा के अर्थ में प्रयोग हिंदी के लिए ही किया जाता है। मुगल शासक बाबर ने भी इसी अर्थ में इसका प्रयोग किया है।
- 18वीं शताब्दी में इसका प्रयोग मुसलमानों की भाषा के लिए किया गया और यह उर्दू का पर्याय हो गई। प्राचीन एंग्लो–इंडियन इसे **मूर्स** भी कहते थे।
- 1900 ई. के आस-पास हिंदुस्तानी का प्रयोग कभी उर्दू के लिए तो कभी **सरल हिंदी** या **सरल उर्दू** के लिए होने लगा। हिंदी-उर्दू के विरोध के परिप्रेक्ष्य में 1926 ई. में कांग्रेस अधिवेशन में पुरुषोत्तमदास टंडन ने अधिवेशन की कार्यवाही **हिंदुस्तानी** में रखने यानी हिंदी और उर्दू के बीच की सरल भाषा में चलाने का प्रस्ताव किया। इन सबके पीछे गाँधी जी का हाथ था। आज भी हिंदुस्तानी का प्रयोग सामान्यतः आम आदमी की आम भाषा के अर्थ में होता है।

हिंदुई

- हिंदवी, हिंदुई या हिंदुवी नाम का प्रयोग प्राचीन हिंदी के लिए खुसरो के समय से ही मिलता है। पहले हिंदी की तुलना में हिंदवी शब्द अधिक प्रचलित था। आगे चलकर संस्कृत शब्दावली वाली भाषा के लिए हिंदवी, हिंदुई नाम चला तथा अरबी-फारसी युक्त शब्दावली वाली भाषा के लिए हिंदुस्तानी। गार्सा द तासी (फ्रांसिसी लेखक) के हिंदी साहित्य के इतिहास में इसी का उपयोग है।
- हिंदी की मानक भाषा जो अब साहित्य, शिक्षा, पत्रकारिता, राजभाषा आदि के क्षेत्र में मान्य है, हिंदी की अन्य सभी बोलियों तथा शैलियों से अपनी कुछ अलग भाषागत विशेषताएँ रखती हैं, जो इस प्रकार हैं–

मानक हिंदी की भाषागत विशेषताएँ—

- मानक हिंदी में **ऐ** तथा **औ** का उच्चारण **मूल स्वर** के रूप में होता है, मैथिली, मगही की तरह **अए** तथा **अव** या **अओ** संयुक्त स्वर के रूप में नहीं।
- हिंदी लिपि चिह्नों में विद्यमान **अ** स्वर का उच्चारण हमेशा नहीं होता, कभी-कभी अ स्वर लुप्त हो जाता है, जैसे–जंता (जनता), काम्ना (कामना)।
- **स** तथा **श** व्यंजनों का अलग-अलग उच्चारण होता है।
- **य** तथा **व** का अर्धस्वरों की तरह उच्चारण होता है। (**न** कि **य** का **ज** हो जाना तथा **व** का **ब** हो जाना जोकि बोलियों में होता है।)
- व्यंजन गुच्छों (पट्टी, खट्टी) का **यथासंभव** शुद्ध उच्चारण होता है।
- यथावश्यक द्वित्व का प्रयोग– मिट्टी, खड्डा।
- **'ने'** कर्ता कारक चिह्न का प्रयोग (भूतकाल में सकर्मक क्रिया आने पर)।
- संबंधवाचक के रूप में **'का'** कारक चिह्न का प्रयोग।
- भूतकालिक कृदंतों में आकारांत की प्रवृत्ति **(पढ़ा, चला)** भविष्यकाल में **ग** रूपों का प्रयोग **(पढ़ेगा, चलेगा)।**
- आकारांत बहुलता– **लड़का (संज्ञा), बड़ा (विशेषण), गया (क्रिया), खेलना (संज्ञार्थक क्रिया)।**
- आकारांत पुल्लिंग संज्ञाओं का तिर्यक एकवचन रूप **एकारांत** हो जाता है **(लड़के ने पढ़ा)**। यही नियम आकारांत विशेषण पर भी लागू होता है। (बड़े लड़के ने पढ़ा)।
- संज्ञा, विशेषण और क्रियाओं में लिंग वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। (**बड़ा लड़का** पढ़ता है। **बड़ी लड़की** पढ़ती है। **बड़े लड़के** पढ़ते हैं)।

राष्ट्रभाषा, राजभाषा, मातृभाषा, सम्पर्क भाषा एवं विभाषा के रूप में हिंदी का स्वरूप

- ''जब कोई आदर्श भाषा उन्नत होकर और भी महत्वपूर्ण बन जाती है तथा पूरे राष्ट्र में अन्य भाषा क्षेत्र तथा अन्य भाषा परिवार क्षेत्र में भी उसका प्रयोग सार्वजनिक कार्यों आदि में होने लगता है तो वह **राष्ट्रभाषा** का स्थान ग्रहण कर लेती हैं।'' **—भोलानाथ तिवारी**
- देश में अधिक से अधिक व्यक्तियों के द्वारा बोली जाने वाली व्यापक विचार विनिमय का माध्यम होने के कारण हिंदी राष्ट्रभाषा का पद ग्रहण करती है। इससे वैचारिक एवं भावात्मक एकता का जन्म होता है।
- संविधान ने हिंदी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया है, राष्ट्रभाषा के नहीं तथापि संविधान में हिंदी के विकास के संदर्भ में 'सामासिक संस्कृति' का उल्लेख हिंदी के राष्ट्रभाषा रूप की प्रत्यक्ष स्वीकृति ही है।
- 30 अक्टूबर, 1949 को हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का सम्मान और गौरव प्रदान किया गया है।
- मुंबई के फ्रीचर्च कॉलेज के प्राध्यापक श्री पेठे की '**राष्ट्रभाषा**' पुस्तक 1864 में मराठी में प्रकाशित हुई।
- ''बच्चा जन्म लेकर अपनी माता से जो भाषा ग्रहण करता है, उसे मातृभाषा कहते हैं।'' **—विद्यानाथ प्रसाद वर्मा**
- मातृभाषा का सामान्य अर्थ 'माता की भाषा' है यानी बालक अपनी माँ से जो भाषा सीखता है, वह उसकी मातृभाषा मानी जाती है। मातृभाषा किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है।
- भारतेंदु ने मातृभाषा के लिए '**निज भाषा**' शब्द का प्रयोग किया है।
- 'मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है, जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।' **—गाँधीजी**
- 'मातृभाषा मनुष्य के शरीर में धड़कते हृदय की भाषा है। इसे हिंडोले की भाषा (Language of the Cardle) भी कहा जाता है।'
- 'मातृभाषा बच्चे की वह भाषा है, जिसके द्वारा वह सोचता और सपने बुनता है।' **—पी.बी. बैलर्ड**
- राज्य या प्रशासन की भाषा को 'राजभाषा' कहा जाता है।
- राजभाषा का अर्थ है—सरकारी कामकाज के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा। जिस समय हमारे यहाँ राजाओं तथा नवाबों का राज था उस समय राजभाषा को 'दरबारी भाषा' कहा जाता था।
- राजभाषा का प्रयोग मुख्यतः चार क्षेत्रों में अभिप्रेत है—शासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका।
- संविधान में राजभाषा से संबंधित प्रावधान भाग 17 अनुच्छेद, 343 से 351 में किए गए हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है।
- 14 सितम्बर, 1949 को सर्वसम्मति से हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित कर दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 में लिखा गया है कि— 'देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की **राजभाषा** होगी।'
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष बाल गंगाधर खरे थे। राजभाषा आयोग की प्रथम बैठक 15 जुलाई, 1955 को हुई थी।
- संघ की राजभाषा को 26 जनवरी, 1950 से लागू किया गया।
- संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के 20 और राज्यसभा के 10 सदस्य होते हैं।

- प्रथम राजभाषा अधिनियम 1963, 10 मई 1963 से लागू हुआ।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 द्वारा शासन कार्य में 'अंग्रेजी' को व्यवहार की 15 वर्ष की समय–सीमा को समाप्त कर दिया गया।
- राजभाषा की दृष्टि से भारत को तीन क्षेत्रों में बाँटा गया है—
- हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की इंदिरा गांधी पुरस्कार योजना का प्रथम पुरस्कार ₹ 15000 है।
- केन्द्रीय हिंदी समिति की अध्यक्षता 'प्रधानमंत्री' करते हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 343 (i) के अनुसार—"संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। किन्तु इसी धारा के अन्तर्गत यह प्रावधान कर दिया गया कि संविधान के प्रारम्भ होने से 15 वर्ष की कालावधि के लिए उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी होता रहेगा जिसके लिए वह पहले से प्रयुक्त होती रही हो।"
- गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना 25 जून, 1976 को की गई थी।
- संविधान के अनुसार वही भाषा राष्ट्रभाषा की श्रेणी में आती है जिसमें राष्ट्रभाषा के सर्वाधिक गुण विद्यमान हों, जो निम्नलिखित हैं—
  - राष्ट्रभाषा देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाती हो।
  - उसमें उच्चकोटि के साहित्य की रचना हुई हो।
  - उसका शब्द भण्डार विस्तृत एवं समृद्ध हो।
  - वह व्यापक क्षेत्र में व्यवहृत हो।
  - उसका व्याकरण सरल एवं नियमबद्ध हो।
  - उसकी लिपि सुस्पष्ट एवं वैज्ञानिक हो।
  - वह राष्ट्रीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हो।
  - वह भाषा राष्ट्रीय एकता में सहायक हो।

  इन समस्त विशेषताओं के आधार पर हिंदी के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में ये गुण विद्यमान नहीं हैं, अतः सिर्फ हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकती है।
- संविधान की आठवीं सूची में 22 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है जिसमें उर्दू, गुजराती, तमिल, पंजाबी, मराठी, संस्कृत, हिंदी, मणिपुरी, बोडो, संथाली, असमिया, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, तेलुगु, बांग्ला, मलयालम, सिन्धी, नेपाली, कोंकणी, मैथिली, डोगरी शामिल हैं।
- राजभाषा के अन्तर्गत किसी विदेशी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया जा सकता है परन्तु राष्ट्रभाषा किसी स्वदेशी भाषा को ही बनाया जा सकता है।
- राजभाषा मानक भाषा होती है जबकि राष्ट्रभाषा अन्य भाषाओं के क्षेत्रीय प्रभावों को ग्रहण करती है।
- राजभाषा किसी भी देश में एक से अधिक हो सकती हैं परन्तु राष्ट्रभाषा किसी देश में एक ही होती है।
- राजभाषा दिवस हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है।
- ''संपर्क-भाषा से तात्पर्य उस भाषा रूप से है, जो समाज के विभिन्न वर्गों या निवासियों के बीच संपर्क के काम आती है। इस दृष्टि से भिन्न-भिन्न बोली बोलने वाले अनेक वर्गों के बीच हिंदी एक संपर्क-भाषा है और अन्य कई भारतीय क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने वालों के बीच भी संपर्क-भाषा है।'' **—डॉ. पूरनचंद टंडन**
- भाषा के सन्दर्भ में 'संपर्क भाषा' का अर्थ होता है—जोड़ने वाली भाषा।
- 'भाषाविज्ञान कोष' के अनुसार विभाषा (Dialect) 'किसी भाषा के उस विशिष्ट रूप को कहा जाता है, जो किसी प्रान्त विशेष अथवा सीमित भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाती है। जो अपने उच्चारण, व्याकरण रूप एवं शब्द-प्रयोग की दृष्टि से अन्य परिनिष्ठित एवं साहित्यिक भाषाओं से भिन्न होती है।' जैसे—अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा, पंजाबी, गुजराती, कन्नड़, तमिल, बंगला आदि सभी विभाषा या उपभाषा के उदाहरण हैं।
- विभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता है। यह एक प्रान्त या उपप्रान्त में प्रयुक्त होती है। एक विभाषा में स्थानीय भेदों के आधार पर कई बोलियाँ प्रचलित होती हैं।
- भाषा बोली का पूर्ण विकसित रूप है और विभाषा बोली का अर्ध विकसित रूप है।
- भाषा का उदाहरण हिंदी, उर्दू, बंगाली आदि है वहीं विभाषा का उदाहरण—मैथिली, अवधी, भोजपुरी आदि है।
- सम्पर्क भाषा का आशय है—जोड़ने वाली भाषा यानी एक ऐसी भाषा जो अलग–अलग भाषाओं के बोलने वाले लोगों को जोड़ती है।
- भारत की सम्पर्क भाषा है—हिंदी।
- भारत में प्राचीन युग में संस्कृत संपर्क भाषा की भूमिका निभाती रही किन्तु धीरे–धीरे वह स्थान हिंदी ने ले लिया।

विश्व हिंदी सम्मेलन

सम्मेलन	स्थान/देश	अवधि
पहला विश्व हिंदी सम्मेलन	नागपुर (भारत)	10 से 14 जनवरी 1975
दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन	मॉरीशस	28 से 30 अगस्त 1976
तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन	दिल्ली (भारत)	28 से 30 अक्टूबर 1983
चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन	मॉरीशस	2 से 4 दिसम्बर 1993
पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	टोबैगो	4 से 8 अप्रैल 1996
छठा विश्व हिंदी सम्मेलन	लन्दन (ब्रिटेन)	14 से 18 सितम्बर 1999
सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	सूरीनाम	5 से 9 जून 2003
आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	न्यूयार्क (अमेरिका)	13 से 15 जुलाई 2007
नवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका)	22 से 24 सितम्बर 2012
दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	भोपाल (भारत)	10 से 12 सितम्बर 2015
ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुईस (मॉरीसस)	18 से 20 अगस्त 2018
बारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	नाड़ी (फिजी)	15 से 17 फरवरी 2023

देवनागरी लिपि

- लिपि की उत्पत्ति भाषा की उत्पत्ति से बहुत बाद में हुई। लिपि मानव समुदाय का महत्वपूर्ण आविष्कार है।
- लिपि की उत्पत्ति से पूर्व भावाभिव्यक्ति का दायरा बोलने और सुनने तक सीमित था। मनुष्य की यह उत्कट अभिलाषा रही होगी कि उसके ज्ञान-विज्ञान संबंधी भाव/विचार दूर-दूर तक पहुँचें और उन्हें भविष्य

के लिए संचित किया जा सके, उनका संरक्षण किया जा सके। इसी आवश्यकता की पूर्ति करना उसका लक्ष्य बन गया और आगे चलकर यही मनुष्य के लिए लिपि के आविष्कार की प्रेरणा भी बनी।

- भाषा के उच्चरित रूप को निर्धारित प्रतीक चिह्नों के माध्यम से लिखित रूप देने का साधन ही लिपि है अर्थात् भाषा लिखने का ढंग लिपि है। लिपि मनुष्य द्वारा अपने भावों, अनुभवों आदि को संप्रेषित करने का दृश्य माध्यम है। विश्व में अनेक भाषाएँ और उनकी लिपियाँ प्रचलित हैं जिनमें कुछ इस प्रकार हैं–

भाषा	लिपि
हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि	देवनागरी
उर्दू, अरबी	फारसी, अरबी
पंजाबी	गुरुमुखी
अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन	रोमन
रूसी, बुल्गेरियन	रूसी

- लिपि के कारण ही हमें सहस्त्रों वर्ष पूर्व के शिलालेख, ताम्रपत्र हस्तलेख आदि उस काल के इतिहास, वैभव, सभ्यता आदि से परिचित कराते हैं और उसे जीवंत बनाए हुए हैं।
- भारत में अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं जैसे– देवनागरी, बांग्ला, तमिल, तेलुगु, मलयालम, गुरुमुखी आदि। इन लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है।
- ब्राह्मी के प्राचीनतम नमूने (शिलालेख) ईसा से 500 वर्ष पूर्व के प्राप्त होते हैं और 350 ई. तक इसका यह स्वरूप प्रचलित रहा। बाद में इसकी दो शैलियाँ-उत्तरी और दक्षिणी विकसित हो गईं।
- उत्तरी शैली को परवर्ती समय में गुप्त लिपि के नाम से जाना जाने लगा। इसके बाद कुटिल लिपि का विकास हुआ जो छठी से नवीं शताब्दी तक उत्तर भारत में प्रचलित रही।
- दसवीं शताब्दी में कुटिल लिपि से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ। इस प्रकार देवनागरी लिपि का प्रारंभ 1000 ई. से माना जाता है। देवनागरी लिपि निरंतर विकसित होती गई और वर्तमान में यह समृद्ध लिपि के रूप में प्रसिद्ध हो गई। देवनागरी को विद्वानों ने आज पूर्णतः एक वैज्ञानिक लिपि स्वीकार किया है।
- आधुनिक संदर्भ में देखें तो भारत में 179 भाषाएँ और 544 उपभाषाएँ हैं। इन सभी को भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रो एशियाटिक और चीनी-तिब्बती परिवारों में बाँटा गया है।
- भारोपीय परिवार में, हिंदी, असमिया, बांग्ला, ओडिआ, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, कश्मीरी और **द्रविड़ परिवार में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम, आस्ट्रो एशियाटिक परिवार में संताली और चीनी-तिब्बती परिवार में बोडो तथा मणिपुरी भाषाएँ आती हैं।**
- वर्तमान में संविधान की अष्टम अनुसूची में 22 भाषाओं को 'राष्ट्रीय भाषा' का दर्जा दिया गया है जिनकी लिपियाँ इस प्रकार हैं–

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
• असमी	असमिया	• तेलुगु	तेलुगु	• सिंधी	अरबी/देवनागरी
• ओड़िया	ओड़िया	• नेपाली	देवनागरी	• हिंदी	देवनागरी
• उर्दू	अरबी/फारसी	• पंजाबी	गुरुमुखी	• संथाली	ओल चिकि/देवनागरी
• कन्नड़	कन्नड़	• बांग्ला	बांग्ला	• मैथिली	तिरहुता/देवनागरी
• कश्मीरी	पश्तो-अरबी	• मणिपुरी	मैती	• बोडो	देवनागरी
• कोंकणी	देवनागरी	• मराठी	देवनागरी	• डोगरी	देवनागरी
• गुजराती	गुजराती/देवनागरी	• मलयालम	मलयालम		
• तमिल	तमिल	• संस्कृत	देवनागरी		

देवनागरी अंक

- देवनागरी अंक निम्न रूप में लिखे जाते हैं–

देवनागरी अंक	हिंदी	अंग्रेजी अंक
०	शून्य	0
१	एक	1
२	दो	2
३	तीन	3
४	चार	4
५	पाँच	5
६	छः	6
७	सात	7
८	आठ	8
९	नौ	9

देवनागरी लिपि का स्वरूप

- यह लिपि बायीं ओर से दायीं ओर लिखी जाती है।
- यह न तो शुद्ध रूप से अक्षरात्मक लिपि है और न ही वर्णात्मक लिपि।

देवनागरी लिपि की विशेषतायें : इस लिपि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- देवनागरी लिपि के ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक।
- इस लिपि के उच्चारण और प्रयोग में समानता है।
- लिपि के स्वर ह्रस्व एवं दीर्घ में बँटे हुए हैं।
- इसमें प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण हैं।
- इस लिपि के वर्णो की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य हैं।
- इसमें निश्चित मात्राएँ हैं।

- प्रत्येक के लिए अलग लिपि चिह्न है।
- यह लिखाई और छपाई दोनों में समान है।
- इसके एक वर्ण में दूसरे वर्ण का भ्रम नहीं है।

देवनागरी लिपि के दोष—देवनागरी लिपि के दोष निम्नलिखित हैं–

- इसमें अनावश्यक वर्ण हैं जैसे– **ऋ, ॠ , ऌ, ॡ, ष**।
- दो-दो प्रकार से लिखे जा सकने वाले द्विरूपवर्ण– **ज्ञ, क्ष, त्र, छ, झ, ण, श**।
- शिरोरेखा का प्रयोग आवश्यक माना जाता है।
- वर्णों के संयुक्तिकरण में र के प्रयोग को लेकर भ्रम की स्थिति।
- वर्णों के संयुक्त करने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं होती।
- इ की मात्रा का लेखन वर्ण के पहले पर उच्चारण वर्ण के बाद (ि)।
- लिखते समय हाथ को बार-बार उठाना पड़ता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- खड़ी बोली हिंदी का उद्‌भव किस अपभ्रंश से हुआ है? **—शौरसेनी**
- बिहारी हिंदी का विकास किस प्राकृत या अपभ्रंश से माना गया है? **—मागधी**
- **'भोजपुरी'** बोली की उत्पत्ति हुई है। **—मागधी अपभ्रंश से**
- पूर्वी हिंदी वर्ग की बोलियों का विकास किससे माना गया है? **—अर्द्धमागधी अपभ्रंश**
- 'राँघड़ी' बोली कहाँ बोली जाती है? **—हरियाणा**
- **सूरदास** और **नन्ददास** की काव्य रचनाओं की भाषा है? **—ब्रजभाषा**
- 'मथुरा, आगरा, धौलपुरा, ग्वालियर आदि' क्षेत्र में बोली, बोली जाती है। **—ब्रजभाषा**
- मध्य प्रदेश की प्रमुख बोलियों में से है। **—मालवी, निमाड़ी, बुन्देली**
- 'ब्रज' हिंदी की किस उपभाषा के अन्तर्गत है? **—पश्चिमी हिंदी**
- **बाँगरू** किस उपभाषा वर्ग की बोली है? **—पश्चिमी हिंदी**
- **हरियाणवी** या बाँगरू बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है? **—पश्चिमोत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश**
- **'अउचड़'** को खड़ी बोली में क्या कहते हैं? **—जोरदार**
- **'अउते रहिगें'** को खड़ी बोली में क्या कहते हैं? **—आते ही रहें**
- **'इरखा'** को खड़ी बोली में क्या कहते हैं? **—ईर्ष्या**
- **'होन'** को खड़ी बोली में क्या कहते हैं? **—वहाँ**
- **पश्चिमी हिंदी** की सर्वाधिक प्रमुख बोली है। **—ब्रजभाषा**
- **'ग्वालियर'** की बोली है— **—बुन्देली**
- **झाँसी, जालौन, हमीरपुर** में बोली प्रचलित है। **—बुन्देली**
- ध्रुपद गायन का संबंध किस भाषा से है? **—ब्रजभाषा**
- 'रामचरितमानस' की भाषा क्या है? **—अवधी**
- **कर्ता के साथ 'ने'** का प्रयोग न होना **किस उपभाषा** की प्रमुख विशेषता है? **—पूर्वी हिंदी**
- किस बोली में **कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न प्रयुक्त नहीं होता** है? **—अवधी**
- किस बोली में 'ने' का प्रयोग नहीं होता? **—अवधी**
- इलाहाबाद में बोली जाने वाली बोली है। **—अवधी**
- 'पूर्वी हिंदी' की बोली है **—अवधी, छत्तीसगढ़ी, बघेली**
- **'पँवारी, भदावरी, राठौरी'** किस बोली से संबंधित हैं? **—बुन्देली बोली की उपबोलियाँ हैं।**
- **'हाड़ौती'** बोली कहाँ बोली जाती है? **—राजस्थान**
- किस क्षेत्र की बोली को **'काशिका'** कहा गया है? **—वाराणसी**
- बिहारी हिंदी का रूप है। **—भोजपुरी, मगही, मैथिली**
- मैथिली बोली के लोकप्रिय कवि हैं **—विद्यापति**
- 'अंगिका' किस राज्य की बोली है? **—बिहार**
- उकार बहुला बोली मानी जाती है। **—अवधी**
- बिहार की बोलियाँ हैं। **भोजपुरी, मगही, मैथिली**
- गाजीपुर में बोली जाने वाली प्रमुख बोली है। **—भोजपुरी**
- बिहार की राजधानी 'पटना' किस बिहारी बोली क्षेत्र में स्थित है?**—मगही**
- उत्तर प्रदेश में कौन-सी भाषा बोली जाती है? **—ब्रजभाषा, कन्नौजी, अवधी**
- **'इरखा'** को खड़ी बोली में क्या कहते हैं? **—ईर्ष्या**
- 'विभाषा' का क्षेत्र बोली की अपेक्षा........होता है। **—विस्तृत**
- **'होन'** को खड़ी बोली में क्या कहते हैं? **—वहाँ**
- किस बोली में कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न प्रयुक्त होता है? **—ब्रज, बुन्देली, खड़ी बोली**
- किस बोली में 'ने' का प्रयोग होता? **—कौरवी, हरियाणवी, मालवी**
- किस बोली में उत्तम पुरुष बहुवचन 'हम' का प्रयोग उत्तम पुरुष एकवचन 'मैं' के अर्थ में किया जाता है? **—अवधी**
- पश्चिमी हिंदी की सर्वाधिक प्रमुख बोली है। **—ब्रजभाषा**
- बोली का क्षेत्र जब थोड़ा विकसित हो जाता है, और उसमें साहित्य की रचना होने पर वह क्या बन जाती है? **—उपभाषा**
- हिंदी भाषा की कितनी विख्यात बोलियाँ हैं ? **—पाँच**
- 'खसखुरा' या 'गुरखाली' भाषा है। **—नेपाल की राजभाषा**
- खड़ी बोली व ब्रजभाषा किस उपभाषा के अन्तर्गत आती हैं? **—पश्चिमी हिंदी**
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना किस वर्ष हुई थी। **—1961 ई. में**
- हिंदी भाषा का प्रथम महाकाव्य है। **—पृथ्वीराज रासो**
- केन्द्रीय हिंदी संस्थान का मुख्यालय कहाँ स्थित है? **—आगरा**
- जिसकी भाषा को टंकसाली भाषा कहा गया है। **—सदासुख लाल**
- नागरी प्रचारणी सभा काशी की स्थापना कब हुई थी? **—1893 ई.**
- हिंदी के प्रयोग की समीक्षा करने के लिए सर्वोच्च समिति कौन-सी है? **—केन्द्रीय हिंदी समिति**
- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति की स्थापना में किसका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है? **—महात्मा गांधी**
- प्रथम हिंदी साहित्य सम्मेलन कब और कहाँ आयोजित हआ था? **—1910, वाराणसी**

- हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए मदन–मोहन मालवीय और पुरुषोत्तम दास टंडन ने सन् 1910 में वाराणसी में किस संस्था की स्थापना की? **–हिंदी साहित्य सम्मेलन**
- हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योगदान के रचयिता हैं **–डॉ. नामवर सिंह**
- क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ऑ किस भाषा से गृहीत ध्वनियाँ हैं? **–अरबी–फारसी एवं अंग्रेजी**
- राजभाषा आयोग का गठन किस धारा के अन्तर्गत किया गया? **–धारा 344**
- राजभाषा आयोग का गठन किसकी अध्यक्षता में किया गया? **–बी.जी.खेर**
- बंबई हिंदी विद्यापीठ की स्थापना कब हुई? **–1938 ई.**
- देवनागरी लिपि से संबंधित है **–कुटिल लिपि**
- कौन-सी लिपि दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती है? **–फारसी**
- कौन-सी भाषा रोमन लिपि में नहीं लिखी जाती है? **–चीनी**
- देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ? **–ब्राह्मी**
- देवनागरी लिपि है। **–ध्वन्यात्मक**
- नागरी लिपि के उद्धारकर्ता हैं। **–मदनमोहन मालवीय**
- नागरी लिपि को दक्षिण में क्या कहा जाता है? **–नंदि नागरी**
- उर्दू भाषा की लिपि है। **–फारसी**
- लिपिचिह्न, वर्तनी और व्याकरण की दृष्टि से विभेद रहित भाषारूप कहलाता है। **मानक भाषा**
- देवनागरी लिपि में सुधार का प्रयास सर्वप्रथम किसने किया? **–महादेव गोविन्द रानाडे**
- उ. प्र. सरकार द्वारा 1947 ई. में गठित देवनागरी लिपि सुधार समिति के अध्यक्ष कौन थे? **–आचार्य नरेंद्र देव**
- देवनागरी लिपि को अप्रामाणिक कहकर 'रोमन लिपि' को किस भारतीय ने प्राथमिकता दी? **–सुनीति चटर्जी कुमार**
- देवनागरी लिपि में हिंदी में अक्षर पर शिरो रेखा लगाने की सलाह किसने दी? **–हिंदी साहित्य सम्मेलन**
- देवनागरी में सुधार के लिए 'अ' 'आ' अि, अी, के रूप में बारह खड़ी स्वीकारने का सुझाव किस समिति ने दिया? **–काका कालेलकर समिति**
- वर्ष 1947 में अं; की बारहखडी देवनागरी लिपि सुधार समिति ने अस्वीकृत कर दी। इस समिति के अध्यक्ष कौन थे? **–आचार्य नरेन्द्र देव**
- देवनागरी लिपि के मानकीकरण के प्रयासों को अन्तिम रूप किसने व कब दिया है? **–शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार), 1976**
- पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग देवनागरी लिपि में किए जाने का सुझाव किसने दिया था? **–बाबू श्याम सुन्दर दास**
- बोली का क्षेत्र जब थोड़ा विकसित होता है, और उसमें साहित्य की रचना होने पर वह क्या बन जाता है? **–उपभाषा**
- पश्चिमी हिंदी की कितनी बोलियाँ हैं? **–पाँच (5)**
- अंगिका किस राज्य की बोली है? **–बिहार**
- किसने पंचम अक्षर के स्थान 'अनुसार' का प्रयोग करने का सुझाव दिया **–श्यामसुन्दर दास**
- गोरखपुर में किस बोली का प्रभुत्व है –भोजपुरी
- आजमगढ़ किस बोली क्षेत्र में स्थित है? **–भोजपुरी**
- किसी भाषा का जन्म सबसे पहले किस रूप में मिलता है? **–बोली**
- उ. प्र. की कौन-सी बोली जो विदेशों में भी बोली जाती है? **–भोजपुरी**
- अवधी काव्य भाषा के कितने रूप मिलते हैं? **–दो**

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. 'हिन्दुस्तानी' भाषा का रूप है?
(A) दक्खिनी हिंदी
(B) संस्कृतनिष्ठ
(C) ब्रजअवधी का मिश्रित रूप
(D) हिंदी-उर्दू मिश्रित

2. इनमें से कौन-सी बोली 'पश्चिमी हिंदी' की बोली है?
(A) कौरवी (B) कन्नौजी
(C) ब्रजभाषा (D) ये सभी

3. मीराबाई के पद राजस्थानी भाषा की किस बोली में लिखे गए हैं?
(A) मालवी (B) जयपुरी
(C) मेवाती (D) मारवाड़ी

4. निम्नलिखित बोलियों में से किस बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से नहीं हुआ है?
(A) बघेली (B) बुन्देली
(C) कन्नौजी (D) ब्रजभाषा

5. 'हाड़ौती' बोली है—
(A) पूर्वी राजस्थान की
(B) दक्षिणी राजस्थान की
(C) पश्चिमी राजस्थान की
(D) उत्तरी राजस्थान की

6. इनमें से कौन-सी भाषा द्रविड़ भाषा नहीं है?
(A) मलयालम (B) तेलुगु
(C) तमिल (D) सौराष्ट्र

7. इनमें से किसे अपभ्रंश का वाल्मीकि कहा जाता है?
(A) अरिष्टनेमी (B) सरहपा
(C) स्वयंभू (D) शबरपा

8. पाली भाषा के सर्वप्रथम वैयाकरण कौन हैं?
(A) पतंजलि (B) पाणिनी
(C) कच्चायन (D) हेमचन्द्र

9. संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्न में से कितनी भाषाओं का उल्लेख है?
(A) इक्कीस (B) तेईस
(C) बाईस (D) चौबीस

10. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
(A) असमिया, उड़िया का विकास मागधी अपभ्रंश से नहीं हुआ है।
(B) अवधी और बघेली बोलियों का विकास पूर्वी हिंदी से हुआ है।
(C) हरियाणवी, ब्रजभाषा बोलियों का विकास बिहारी उपभाषा से नहीं हुआ है।
(D) पूर्वी हिंदी का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।

11. पूर्वी हिंदी का उद्भव किस अपभ्रंश से हुआ है?
(A) पैशाची अपभ्रंश
(B) शौरसेनी अपभ्रंश
(C) अर्धमागधी अपभ्रंश
(D) नागरी अपभ्रंश

12. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश हैं?
(A) 343 (B) 344
(C) 351 (D) 348

13. वर्तमान हिंदी का प्रचलित रूप इनमें से कौन–सा है?
(A) खड़ी बोली (B) अवधी
(C) ब्रजभाषा (D) देवनागरी

14. 'अवधी बोली' का अन्य नाम है–
(A) कोसली (B) बनाफरी
(C) बैगानी (D) मघेसी

15. भारत में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं के परिवार किस विकल्प में दिखाए गए हैं ?
(A) आर्य, द्रविड़, यूरोपीय, अरबी
(B) रोमन, तमिल, देवनागरी, उर्दू
(C) आर्य, आर्येतर, वैदिक, संस्कृत
(D) भारोपीय, आग्नेय, द्रविड़, तिब्बत-धर्मी

16. 'अवहट्ट' का तात्पर्य क्या है?
(A) परिनिष्ठित अपभ्रंश
(B) अवधी
(C) सधुक्कड़ी
(D) ब्रज

17. शौरसेनी अपभ्रंश के अन्तर्गत आने वाली भाषा नहीं है–
(A) गुजराती (B) सिन्धी
(C) राजस्थानी (D) पश्चिमी हिंदी

18. 'हिंदी' की कितनी उपभाषाएँ हैं?
(A) दो (B) चार
(C) पाँच (D) सात

19. हिंदी भाषा की बोलियों के वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ी बोली है।
(A) पूर्वी हिंदी (B) पश्चिमी हिंदी
(C) पहाड़ी हिंदी (D) राजस्थानी हिंदी

20. हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का सही क्रम चुनिए।
(A) संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, शौरसेनी, पश्चिमी हिंदी, खड़ी बोली
(B) संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, शौरसेनी, पश्चिमी हिंदी खड़ी बोली
(C) संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, खड़ी बोली, शौरसेनी, पश्चिमी हिंदी
(D) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, शौरसेनी, पश्चिमी हिंदी, खड़ी बोली

21. 'खड़ी बोली' का एक अन्य नाम है–
(A) अन्तर्वेदी (B) प्राची
(C) कौरवी (D) हरियाणवी

22. लिपि के विकास का क्रमिक सोपान है–
(A) सूत्र लिपि, चित्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि, भावमूलक लिपि
(B) भावमूलक लिपि, सूत्र लिपि, चित्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि
(C) चित्र लिपि, सूत्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि, भावमूलक लिपि
(D) सूत्र लिपि, भावमूलक लिपि, चित्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि

23. हिंदी के विकास के सम्बन्ध में निम्नांकित कथनों में एक असत्य है।
(A) हिंदी का विकास संयोगात्मक भाषा के रूप में हुआ।
(B) हिंदी का विकास लगभग 1000 ई. से माना जाता है।
(C) हिंदी अपभ्रंश के बाद की भाषा है।
(D) हिंदी एक वियोगात्मक भाषा है।

24. निम्नलिखित में से कौन पश्चिमी हिंदी की बोली नहीं है?
(A) बुंदेली (B) ब्रज
(C) कन्नौजी (D) बघेली

25. हिंदी भाषा के विकास का सही अनुक्रम कौन–सा है?
(A) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी
(B) प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, पालि
(C) अपभ्रंश, पालि, प्राकृत, हिंदी
(D) हिंदी, पालि, अपभ्रंश, प्राकृत

26. देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ है?
(A) खरोष्ठी लिपि से (B) ब्राह्मी लिपि से
(C) फारसी लिपि से (D) रोमन लिपि से

27. इनमें से किस राज्य में सबसे पहले 'देवनागरी लिपि' का प्रयोग हुआ है?
(A) गुजरात (B) महाराष्ट्र
(C) राजस्थान (D) उत्तर प्रदेश

28. देवनागरी लिपि मूलतः क्या है?
(A) वर्णनात्मक (B) चित्रात्मक
(C) प्रतीकात्मक (D) अक्षरात्मक

29. यह बोली पूर्वी हिंदी वर्ग की बोली नहीं है–
(A) बुन्देली (B) अवधी
(C) छत्तीसगढ़ी (D) बघेली

30. इनमें से हिंदी की आदि जननी कौन है?
(A) अपभ्रंश (B) प्राकृत
(C) संस्कृत (D) पालि

31. अधिकतर भारतीय भाषाओं का विकास किस लिपि से हुआ?
(A) ब्राह्मी (B) खरोष्ठी लिपि
(C) कुटिल लिपि (D) शारदा लिपि

32. कन्नौजी बोली किस जनपद में बोली जाती है?
(A) मेरठ जनपद (B) देहरादून जनपद
(C) हरदोई जनपद (D) मथुरा जनपद

33. अधोलिखित में से कौन–सी बोली उत्तर प्रदेश की नहीं है ?
(A) ब्रज (B) अवधी
(C) भोजपुरी (D) बघेली

34. बहराइच, सुल्तानपुर, रायबरेली किस बोली के क्षेत्र हैं ?
(A) छत्तीसगढ़ी (B) बघेली
(C) ब्रजभाषा (D) अवधी

35. खड़ी बोली हिंदी का अन्य सही नाम है–
(A) भारती (B) कौरवी
(C) हरियाणवी (D) हिंदी

36. भारत में भाषा के आधार पर सर्वप्रथम किस राज्य का गठन हुआ?
(A) पंजाब (B) जम्मू-कश्मीर
(C) आंध्र-प्रदेश (D) बिहार

37. इनमें से किस राज्य की मुख्य राज्यभाषा हिंदी नहीं है?
(A) हिमाचल प्रदेश (B) झारखंड
(C) असम (D) छत्तीसगढ़

38. भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी का प्रयोग कितने वर्षों तक करने का सुझाव दिया गया था?
(A) 14 वर्षों तक (B) 15 वर्षों तक
(C) 20 वर्षों तक (D) हमेशा

39. हिंदी के संख्यावाचक शब्दों का मानक रूप सही है?
(A) इकतीस (B) सतावन
(C) उननब्बे (D) इकरानबे

40. हिंदी के संख्यावाचक शब्दों का मानक रूप गलत है?
(A) ग्यारह (B) चमालीस
(C) इकहत्तर (D) उनहत्तर

41. देवनागरी लिपि की विशेषता नहीं है–
(A) वर्णमाला का वर्गीकरण
(B) ध्वनि के अनुरूप लिपि चिह्न
(C) एक ध्वनि के लिए एकाधिक लिपि चिह्न
(D) लिपि चिह्नों की पर्याप्तता

42. देवनागरी अंक की दृष्टि से सभी-युग्म अशुद्ध हैं?
(A) ३, ४, ६ (B) ९, ७, २
(C) 4, 5, 6 (D) ९, २, ५

43. निम्नलिखित में से मानक हिंदी (खड़ी बोली) की विशेषता नहीं है–
(A) खड़ी बोली में यथावश्यक द्वित्व शब्दों का प्रयोग होता है–पट्टी, चिट्ठी।
(B) संज्ञा, विशेषण और क्रियाओं में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन होता है।
(C) खड़ी बोली की प्रवृत्ति ओकारांत बहुलता की है–पढ़ो, चलो, लिखो।
(D) आकारांत पुल्लिंग संज्ञाओं का तिर्यक एकवचन रूप एकारांत हो जाता है–लड़के ने आम खाया।

44. इनमें से कौन–सा राज्य राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार 'ख' श्रेणी का राज्य है?

(A) गुजरात (B) हरियाणा
(C) तमिलनाडु (D) गोआ

45. राजभाषा सूची, 1976 के अनुसार 'ख' श्रेणी के राज्यों से केंद्र सरकार पत्र–व्यवहार किस भाषा में कर सकती है?

(A) हिंदी (B) अंग्रेजी
(C) प्रादेशिक भाषा (D) हिंदी एवं अंग्रेजी

46. सही क्रम बताइए–

(A) वैदिक संस्कृत – लौकिक संस्कृत – पालि – प्राकृत
(B) प्राकृत – वैदिक संस्कृत – लौकिक संस्कृत – पालि
(C) वैदिक संस्कृत – लौकिक संस्कृत – पालि – अपभ्रंश
(D) वैदिक संस्कृत – पालि – अप्रभंश – प्राकृत

47. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा युग्म गलत है?

(A) अवधी – पूर्वी हिंदी
(B) ब्रजभाषा – पश्चिमी हिंदी
(C) खड़ी बोली – पश्चिमी हिंदी
(D) भोजपुरी – पूर्वी हिंदी

48. कौन-सी भाषा द्रविड़ परिवार की नहीं है?

(A) कन्नड़ (B) मलयालम
(C) बंगाली (D) तेलुगू

49. आचार्य शुक्ल ने हिंदी गद्य के प्रारंभिक चार उन्नायकों में इनमें से किसको स्थान नहीं दिया?

(A) शिवप्रसाद सितारेहिंद
(B) मुंशी इंशा अल्लाँ खाँ
(C) सदल मिश्र
(D) लल्लूलाल

50. राजभाषा अधिनियम, 1976 के अनुसार इनमें से 'ख' श्रेणी के अंतर्गत कौन–सा राज्य नहीं आता?

(A) पंजाब (B) हिमाचल प्रदेश
(C) गुजरात (D) महाराष्ट्र

उत्तरमाला

1. (D)	**2.** (D)	**3.** (D)	**4.** (A)	**5.** (A)
6. (D)	**7.** (C)	**8.** (C)	**9.** (C)	**10.** (A)
11. (C)	**12.** (C)	**13.** (A)	**14.** (A)	**15.** (D)
16. (A)	**17.** (B)	**18.** (C)	**19.** (A)	**20.** (A)
21. (C)	**22.** (C)	**23.** (A)	**24.** (D)	**25.** (A)
26. (B)	**27.** (A)	**28.** (D)	**29.** (A)	**30.** (C)
31. (A)	**32.** (C)	**33.** (D)	**34.** (D)	**35.** (D)
36. (C)	**37.** (C)	**38.** (B)	**39.** (A)	**40.** (B)
41. (C)	**42.** (C)	**43.** (C)	**44.** (A)	**45.** (D)
46. (A)	**47.** (D)	**48.** (C)	**49.** (A)	**50.** (B)

❑❑